



علامہ محمد اقبال

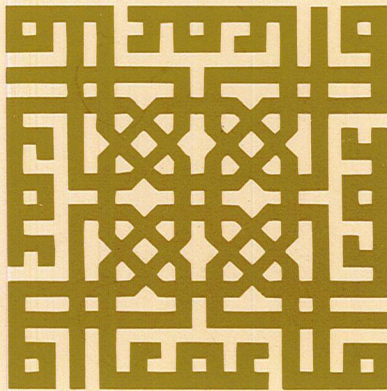
کی اردو شاعری..... (انتخاب)

अल्लामा मुहम्मद इक़बाल

की उर्दू कविता
(चनाव)

(دیوناگری رسم الخط کے ساتھ)

(उर्दू लिपि के साथ)



علامہ محمد اقبال

کی اردو شاعری..... (انتخاب)

अल्लामा मुहम्मद इक़बाल

की उर्दू कविता
(चनाव)

(دیوناگری رسم الخط کے ساتھ)

(उर्दू लिपि के साथ)

इक़बाल अकादमी पाकिस्तान

اقبال اکادمی پاکستان

All Rights Reserved

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

2008

Publisher

प्रकाशक

Muhammad Suheyl Umar

मुहम्मद सुहेल उमर

Director

डायरेक्टर

Iqbal Academy Pakistan

6th Floor, Aiwan-i-Iqbal, Lahore.

इकबाल अकादमी पाकिस्तान

छठी मन्ज़िल, ऐवान-ए-इकबाल, लाहौर

Tel: [+ 92-42] 6314-510

Fax: [+ 92-42] 631-4496

Email: iqbalacd@lhr.comsats.net.pk

Website: www.allamaiqbal.com

ISBN 978-969-416-402-1

First Edition: 2008

Quantity: 1000

Price: Rs.80/-

Printed at: Shirkat Printing Press, Lahore.

Sale Office: 116 Mcleod Road, Lahore. Ph. 7357214

SIGNIFICANCE OF IQBAL

Poets have played a prominent, in some instances indeed a leading part, in that most exciting drama of modern times, the revolt against internal corruption, and against external domination.

Iqbal is the best articulated Muslim response to Modernity that the Islamic world has produced in the 20th century. His response has three dimensions:

- A creative engagement with the conceptual paradigm of modernism at a sophisticated philosophical level through his prose writings, mainly his *The Reconstruction of Religious Thought in Islam* which present his basic philosophic insights
- His Urdu and Persian poetry which is the best embodiment of poetically mediated thought, squarely in the traditional continuity of Islamic literature and perhaps the finest flowering of wisdom poetry, or contemplative poetry or inspired poetry in the modern times.
- As a political activist/ social reformer— rising up to his social responsibility, his calling at a critical phase of history.

अनुकर्म

📁 प्राक्कथन	(संपादक)	08
• हिमाला		10
• बच्चे की दुआ		14
• अकलो-दिल		16
• ऐक आर्जू		18
• तराना-ए-हिन्दी		22
• जुगनू		24
• हिन्दुस्तानी बच्चों का कौमी गीत		28
• नया शिवाला		30
• अब्र		32
• ग़ज़ल.....अनोखी वज़अ है सारे ज़माने से निराले हैं		34
• ग़ज़ल.....ज़ाहिर की आंख से न तमाशा करे कुई		36
• हकीकत-ए-हुस्न		38
• स्वामी राम तीर्थ		40
• चांद और तारे		42
• इन्सान		44
• ग़ज़ल.....ज़माना आया है बे-हिजाबी का		46
• ग़ज़ल.....ज़िन्दगी इन्सां की इक दम के सिवा कुछ भी नहीं		48
• साकी		48
• राम		50
• नानक		52

ترتیب

۸	(مرتب)	دیباچہ [ہندی]	📁
۱۱		ہمالہ	کھ
۱۵		بچوں کی دعا	کھ
۱۷		عقل و دل	کھ
۱۹		ایک آرزو	کھ
۲۳		تراۓ ہندی	کھ
۲۵		جگنو	کھ
۲۹		ہندستانی بچوں کا قومی گیت	کھ
۳۱		نیا سوالہ	کھ
۳۳		ابر	کھ
۳۵		انوکھی وضع ہے، سارے زمانے سے نرالے ہیں (غزل)	کھ
۳۷		ظاہر کی آنکھ سے نہ تماشا کرے کوئی (غزل)	کھ
۳۹		حقیقت حسن	کھ
۴۱		سوامی رام تیرتھ	کھ
۴۳		چاند اور تارے	کھ
۴۵		انسان	کھ
۴۷		زمانہ آیا ہے بے ججائی کا (غزل)	کھ
۴۹		زندگی انسان کی اک دم کے سوا (غزل)	کھ
۴۹		ساقی	کھ
۵۱		رام	کھ
۵۳		نانک	کھ

• पैवस्ता रह शजर से, उमीद ए बहार रख	54
• फूल	56
• सर्मायाओ—महनत	58
• गज़ल.....फिर बाद—ए—बहार आई, इकबाल गज़ल ख्वां हो	60
• गज़ल.....कभी ऐ हकीकत—ए—मुन्तज़र!	62
• गज़ल.....परीशां हो के मेरी खाक आखिर दिल न बन जाए	64
• गज़ल.....फिर चराग—ए—लाला से रौशन हुए काहो—दमन	66
• गज़ल.....ख़िरद के पास ख़बर के सिवा कुछ और नही	68
• गज़ल.....सितारों से आगे जहां और भी हैं	70
• गज़ल.....करें गे अहल—ए—नज़र ताज़ा बस्तियां आबाद	72
• फ़रमान—ए—खुदा	74
• ज़माना	76
• शाहीं	78
• अल—अर्जो लिल्लाह	80
• शायर	80
• गज़ल.....दिल—ए—मुरदा दिल नहीं है, इसे ज़िन्दा कर दुबारा	82
• रुबरई.....जवानों को मिरी आह—ए—सहर दे	82
• ज़माना—ए—हाज़िर का इन्सान	84
• रुबाई.....ख़िरद से राह—रो रौशन, बसर है	84
• सुलतान टीपू की वसियत	86
• रुबाई.....खुदाई अहतमाम—ए—खुशको—तर है	86
• गज़ल.....मिले गा मन्ज़िल—ए—मकसुद का उसी को सुराग	88
• रुबाई.....तिरी दुनिया जहान—ए—मुर्गो—माही	88
• गज़ल.....दरिया में मोती, ऐ मौज़—ए—बे—बाक	90
• गज़ल.....निशां यही है ज़माने में ज़िन्दा कौमों का	92

۵۵	پیوستہ رہ شجر سے	کھ
۵۷	پھول	کھ
۵۹	سرمایہ و محنت	کھ
۶۱	پھر باد بہار آئی (غزل)	کھ
۶۳	کبھی اے حقیقت منتظر! (غزل)	کھ
۶۵	پریشاں ہو کے مری خاک (غزل)	کھ
۶۷	پھر چراغِ لالہ سے (غزل)	کھ
۶۹	خرد کے پاس خبر کے سوا کچھ اور نہیں (غزل)	کھ
۷۱	ستاروں سے آگے (غزل)	کھ
۷۳	کریں گے اہل نظر تازہ بستیاں آباد (غزل)	کھ
۷۵	فرمانِ خدا (فرشتوں سے)	کھ
۷۷	زمانہ	کھ
۷۹	شاہیں	کھ
۸۱	الارض للہ	کھ
۸۱	شاعر	کھ
۸۳	دلِ مردہ، دل نہیں ہے (غزل)	کھ
۸۳	جوانوں کو مری آہِ سحر دے (رباعی)	کھ
۸۵	زمانہ حاضر کا انسان	کھ
۸۵	خرد سے راہِ درویش بھر ہے (رباعی)	کھ
۸۷	سلطان ٹیپو کی وصیت	کھ
۸۷	خدا کی اہتمامِ خشک و تر ہے (رباعی)	کھ
۸۹	طے گا منزلِ مقصود کا اسی کو سراغ (غزل)	کھ
۸۹	جڑی دنیا جہانِ مرغ و مائی (رباعی)	کھ
۹۱	دریا میں موتی، اے موج بے باک (غزل)	کھ
۹۳	نشاں یہی ہے زمانے میں (غزل)	کھ

प्राक्कथन

शायर—ए—मशरिफ़ (पूरब के कवि) अल्लामा मुहम्मद इक़बाल (1877-1938) की कविता पाकिस्तान, भारत और बंगलादेश ही में नहीं, दुनिया भर में मक़बूलो—मअरूफ़ है। कुछ लोग इक़बाल को सिर्फ़ 'अस्लामी कवि' समझते हैं, लेकिन समय गुजरने के साथ—साथ इस हकीकत को मान लिया गया है कि 'मुसलमान इक़बाल' की कविता हर उस इन्सान के दिल की आवाज़ है, जो किसी भी तरह की गुलामी या ज़ब्र का शिकार है। सची बात तो यह है कि अंग्रेज़ साम—राज से हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये इक़बाल की कोशिशों को फ़रामोश नहीं किया जा सके गा ।

इक़बाल की अज़मत का इस से बड़ के और कया सबूत हो गा कि भारत, पाकिस्तार, ईरान और केन्द्र ऐशिया के इलावा दुनिया के तरक्की—याफ़ता मुलकों में भी इन के पैगाम को समझने और फैलाने की कोशिश की जा रही है ।

इक़बाल किसी ख़ास मज़हब, किसी फिरक़े या किसी तबक़े के शायर नहीं, बल्कि वह इन्सान की सर—बुलन्दी और इस के किरदार की तअमीर पर यक़ीन रखते हैं। चूँकि वह इन्सान को अल्लाह का नायब समझते हैं, इस लिये इन्सान को किसी भी किस्म की साम—राजी ताक़तों के सामने बे—बस देखने को तय्यार नहीं। इक़बाल इन्सानियत के शायर हैं, इस लिये उन्हों ने पेगम्बर—ए—इस्लाम के इलावा देगर मज़हबों के पेश—वाओं को भी ख़राज—ए—अकीदत पेश किया है।

इक़बाल का पैगाम ख़ास तोर पर हिन्दुस्तानियों के लिये था, इस

लिये ज़रूरत थी कि इसे उर्दू लिपी से ना—वाकिफ़ हिन्दी तबके तक भी पुंहचाया जाय । इस से पहले इस बारे में मुख्तलिफ़ कोशिशों की जाती रही हैं, लेकिन इक़बाल की कविता को देवनागरी में तबदील करने वाले अकसर लिप्यान्तर उर्दू उच्चारण और उर्दू शब्दों की अदायगी पर उबूर न रखने की वजह से जगह—जगह ठोकर खाते रहे हैं। फिर यह भी है कि उर्दू तराकीब के लिये मुख्तलिफ़ उसूल अपनाय जाते रहे, जिस से इक़बाल की कविता के मतालिब वाज़ह नहीं हो सके।

हमारी यह कोशिश इक़बाल की शायरी के एक बड़े चुनाव और आख़िर—कार उन की पूरी उर्दू शायरी को देवनागरी में पेश करने की तरफ़ पहला कदम है।

बांग-ए-दरा, बाल-ए-जिबरील और ज़र्ब-ए-कलीम के इलावा अर्मग़ान-ए-हिजाज़ में भी उर्दू की कुछ नज़में और रुबाइयात शामिल हैं। इस छोटे से चुनाव में इन सब किताबों को पेश—ए—नज़र रखा गया है और कविता के देवनागरी रूप के सामने उर्दू टेक्स्ट भी दिया गया है।

(29 फरवरी 2008)

डा. ख़ालिद नदीम

ڈاکٹر خالد ندیم

हिमाला

ऐ हिमाला! ऐ फ़सील-ए-किशवर-ए-हिन्दूस्तां!
चूमता है तेरी पेशानी को झुक कर आस्मां
तुझ में कुछ पैदा नहीं देरीना रोज़ी के निशां
तू जवां है गर्दिश-ए-शामो-सहर के दरमियां
एक जलवा था कलीम-ए-तूर-ए-सीना के लिए
तू तजल्ली है सरापा चश्म-ए-बीना के लिए
इम्तिहान-ए-दीदा-ए-ज़ाहिर में कोहिस्तां है तू
पास्बां अपना है तू दीवार-ए-हिन्दुस्तां है तू
मतला-ए-अव्वल फ़लक जिस का हो वह दीवां है तू
सु-ए-ख़ल्वत-गाह-ए-दिल दामन कश-ए-इन्सां है तू
बर्फ़ ने बांधी है दस्तार-ए-फ़ज़ीलत तेरे सर
ख़ंदा-ज़न है जो कुलाह-ए-महर-ए-आलम-ताब पर
तेरी उम्र-ए-रफ़ता की इक़ आन है अहद-ए-कुहन
वांदियों में हैं तिरी काली घटायें ख़ैमा-ज़न
चोटियां तेरी सुरय्या से हैं सर-गर्म-ए-सुखान
तू ज़ामीं पर और पहना-ए-फ़लक तेरा वतन
चश्मा-ए-दामन तिरा आईना-ए-सय्याल है
दामन-ए-मोज़-ए-हवा जिस के लिए रूमाल है
अब्र के हाथों में रहवार-ए-हवा के वास्ते
ताज़ियाना दे दिया बर्क-ए-सर-ए-कुहसार ने
ऐ हिमाला! कोई बाज़ी-गाह है तू भी, जिसे
दस्त-ए-कुदरत ने बनाया है अनासिर के लिए

ہمالہ

اے ہمالہ! اے فصیل کشور ہندوستان چومتے تیری پیشانی کو جھک کر اسماں

تجھ میں کچھ پیدا نہیں دینا یہ وزی کے نشان تو جوں ہے گردشِ شام و سحر کے دریاں

ایک جلوہ تھا حکیم طور سینا کے لیے

تو تجلی ہے سرِ اچشمِ بینا کے لیے

آجائید یہ ظاہر میں کہ ہستائے تو پاساں اپنا ہے تو دیوار ہندوستان ہے تو

مطلعِ اولِ فلکِ جن کا ہو وہ دیوان ہے تو ستونِ خلوت کا وہ دل کنشِ انساں ہے تو

برونے بانہی ہے ستا فضیلت تیرے

خندہ ن ہے جو کلاہِ سرِ عالم تابِ

تیری عمرِ فرست کی اک آن ہے ہمہ گین واویوں میں ہیں تری گالی گھسانیں خرمین

چوٹیاں تیری شریا سے ہیں سرگرم سخن تو زبیں پراور ہمنائے فلکتیہ راہن

چشمہ دامن ترا آیتِ نسیاں ہے

دامن موجِ ہوا جس کے لیے دُوال ہے

ابر کے ہاتھوں میں سوار ہوا کے واسطے تازیانے دیارِ برتہ کسار نے

اے ہمالہ! کوئی بازی گاہ ہے تو بھی ہے دستِ قدرتِ بنیاد ہے عناصر کے لیے

हाए क्या फ़र्त-ए-तरब में झूमता जाता है अब्र
फ़ील-ए-बे-ज़ंजीर की सूरत उड़ा जाता है अब्र
जुंबिश-ए-मोज-ए-नसीम-ए-सुबह गहवारा बनी
झूमती है नशशा-ए-हस्ती में हर गुल की कली
यूं ज़बान-ए-बर्ग से गोया है इस की ख़ामुशी
दस्त-ए-गुलची की झटक मैं ने नहीं देखी कभी
कह रही है मेरी ख़ामोशी ही अफ़साना मिरा
कुंज-ए-ख़ल्वत-ख़ाना-ए-कुदरत है काशाना मिरा
आती है नददी फ़राज़-ए-कोह से गाती हुई
कौसरो-तसनीम की मौजों को शर्माती हुई
आइना सा शाहिद-ए-कुदरत को दिखलाती हुई
संग-ए-रह से गाह बचती, गाह टकराती हुई
छेड़ती जा इस इराक-ए-दिल-नशी के साज़ को
ऐ मुसाफ़िर! दिल समझता है तिरी आवाज़ को
लैला-ए-शब खोलती है आ के जब जुल्फ़-ए-रसा
दामन-ए-दिल खेंचती है आबशारों की सदा
वह ख़ामोशी शाम की, जिस पर तकल्लुम हो फ़िदा
वह दरख़्तों पर तफ़क्कुर का समां छाया हुआ
कांपता फिरता है क्या रंग-ए-शफ़क़ कुहसार पर
ख़ुश-नुमा लगता है यह गाज़ा तिरे रुख़सार पर
ऐ हिमाला! दास्तां उस वक़्त की कोई सुना
मसकन-ए-आबा-ए-इन्सां जब बना दामन तिरा
कुछ बता उस सीधी सादी ज़िन्दगी का माजरा
दाग़ जिस पर गाज़ा-ए-रंग-ए-तकल्लुफ़ का न था
हां, दिखा दे ऐ तसव्वुर! फिर वह सुबहो-शाम तू
दौड़ पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिश-ए-अय्याम तू

ہائے کیا فوطرب میں مجھوتا جا تلے ہر
 فیل بے زنجیر کی صورت اڑا جاتا ہے ہر
 جنبش موج نسیم صبح گوارہ نبی جھومتی ہے نشہ ہستی میں ہر گل کی کلی
 یوں زبانِ بگل سے گویا ہے اس کی ناشی دستِ گلچیں کی جھبک میں نے نہیں دکھی کبھی
 کہہ رہی ہے میری خاموشی ہی افسانہ مرا
 گنجِ خلوت خانہ قدرت ہے کا شانہ مرا
 آتی تھی میرا زکوہ سے گاتی ہوتی کوثر و نسیم کی موجوں کو شامی ہوتی
 آئے ساسا پھر قدرت کے دکھلاتی ہوتی سب سے گاہِ بچستی گاہِ نکلاتی ہوتی
 چھینتی جا اس عراقِ دل نشیں کے سارے
 اے سانسِ دل بھرتے تری آواز کو
 لیلی شب لگھوتی ہے آگے جب نون سا وہاں لکھنپتی ہے آتش اڑوں کی صدا
 وہ خموشی شام کی جس پر نظم ہو خدا وہ دوختوں تو پتھر کا سماں چپایا ہوا
 کانپتا پھرتا ہے کیا رنگِ شفق کسار پر
 غرنا لگتا ہے پر عین ازہ تے رخسار پر
 اے ہمالہ! داستانِ اس وقت کی کوئی سنا مسکن آبلے انساں جب بنا وہن ترا
 کچھ بتاؤں سیدھی وہی زندگی کا ماہرا داغ جس پر خازنہ رنگِ تکلف کا تھا
 ہاں لکھا ہے اے تصویر پھر وہ صبح و شام تو
 دوڑتی ہے کی طرف اے کارکشیں ایام تو

बच्चे की दुआ

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शमअ की सूरत हो खुदाया मेरी
दूर दुनिया का मिरे दम से अंधेरा हो जाए
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए
हो मिरे दम से यूंही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
ज़िन्दगी हो मिरी परवाने की सूरत या रब!
इल्म की शमअ से हो मुझ को महब्बत या रब!
हो मिरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मन्दों से, ज़ईफ़ों से महब्बत करना
मिरे अल्लाह! बुराई से बचाना मुझ को
नेक जो राह हो, उस रह पे चलाना मुझ को

بچے کی دُعا

لب پہ آتی ہے دُعا بن کے تفت سیری
 زندگی شمع کی صورت ہو حتما سیری
 دُور دنیا کا مرے دُم سے اندھیرا ہو جائے
 ہر جگہ میرے چمکنے سے اُجالا ہو جائے
 ہو مرے دُم سے یونہی میرے وطن کی زینت
 جس طرح ٹھول سے ہوتی ہے چین کی زینت
 زندگی ہو مری پروانے کی صورت یارب
 علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یارب!
 ہو مرا کام عنبریبوں کی حمایت کرنا
 درد مندوں کے ضعیفوں سے محبت کرنا
 مرے اللہ! بُرائی سے بچانا مجھ کو
 نیک جو راہ ہو اُس رہ پہ چلانا مجھ کو

अक्लो—दिल

अक्ल ने एक दिन यह दिल से कहा
 भूले भटके की रह—नुमा हूँ मैं
 हूँ ज़मीं पर, गुज़र फ़लक पे मिरा
 देख तो किस क़दर रसा हूँ मैं
 काम दुनिया में रहबरी है मिरा
 मिस्ले ख़िज़र—ए—ख़जिस्ता—पा हूँ मैं
 हूँ मुफ़रिसर किताब—ए—हसती की
 मज़हर—ए—शान—ए—किबरिया हूँ मैं
 बूंद इक ख़ून की है तू लेकिन
 ग़ैरत—ए—लाल—ए—बे—बहा हूँ मैं
 दिल ने सुन कर कहा, यह सब सच है
 पर मुझे भी तो देख, क्या हूँ मैं!
 राज़—ए—हसती को तू समझती है
 और आंखों से देखता हूँ मैं
 है तुझे वास्ता मज़ाहिर से
 और बातिन से आशना हूँ मैं
 इल्म तुझ से तो मअरिफ़त मुझ से
 तू खुदा—जू खुदा—नुमा हूँ मैं
 इल्म की इन्तिहा है बे—ताबी
 इस मरज़ की मगर दवा हूँ मैं
 शमअ तू महफ़िल—ए—सदाक़त की
 हुस्न की बज़्म का दिया हूँ मैं
 तू ज़मानो—मकां से रिश्ता—बपा
 ताइर—ए—सिदरा—आशना हूँ मैं
 किस बुलन्दी पे है मक़ाम मिरा
 अर्श रब्ब—ए—जलील का हूँ मैं

عقل و دل

عقل نے ایک دن نیل سے کہا
ہوں زمیں پر، گزر فلک پہ مرا
کام دنیا میں رہ رہی ہے ارا
ہوں منبر کت پہ ہستی کی
بوند اک خون کی ہے تُو لیکن
دل نے سُن کر کہا یہ سب سچ ہے
راہِ ہستی کو تُو سمجھتی ہے
ہے تجھے واسطہ مظاہر سے
علم تجھ سے تو معرفت مجھ سے
علم کی آہ ہے بے تابی
شعاعِ تُو محض صداقت کی
تُو زمان و مکان سے رشتہ بپا
نہو لے بھٹکے کی رہنما ہوں میں
دیکھ تو کس قدر رسا ہوں میں
مثلِ خضرِ خجستہ پا ہوں میں
منظرِ شانِ کبریا ہوں میں
غیرتِ لعلِ بے بہا ہوں میں
پر مجھے بھی تو دیکھ گیا ہوں میں
اور آنکھوں سے دیکھتا ہوں میں!
اور باطن سے آشنا ہوں میں
تُو خدا جو، خدا ناما ہوں میں
اس مرض کی ملدہا ہوں میں
حُسن کی بزم کا دیا ہوں میں
طاہرِ سدرہ آشنا ہوں میں

کس بلندی پہ ہے عتاق مرا
عرشِ پتِ صبیل کا ہوں میں!

ऐक आर्जू

दुनिया की महफिलों से उक्ता गया हूं या रब!
क्या लुत्फ अंजुमन का, जब दिल ही बुझ गया हो
शोरिश से भागता हूं, दिल दूँडता है मेरा
ऐसा स्कूत, जिस पर तक़ीर भी फ़िदा हो
मरता हूं खाम्शी पर, यह आर्जू है मेरी
दामन में कोह के इक छोटा सा झोंपड़ा हो
आज़ाद फ़िक्र से हूं, उज़लत में दिन गुज़ारूं
दुनिया के ग़म का दिल से कांटा निकल गया हो
लज़्जत सरोद की हो, चिड़ियों के चहचहे में
चश्मे की शोरिशों में बाजा सा बज रहा हो
गुल की कली चटक कर पैग़ाम दे किसी का
सागर ज़रा सा गोया मुझ को जहां-नुमा हो
हो हाथ का सरहाना, सब्जे का हो बिछोना
शर्माय जिस से जल्वत, खल्वत में वह अदा हो
मानूस इस क़दर हो सूरत से मेरी बुलबुल
नन्हे से दिल में उस के खटका न कुछ ज़रा हो
सफ़ बांधे दोनों जानिब बूटे हरे-हरे हों
नददी का साफ़ पानी तस्वीर ले रहा हो
हो दिल-फ़रेब ऐसा कुहसार का नज़ारा
पानी भी मोज बन कर, उठ उठ के देखता हो

ایک آرزو

دنیا کی محفوں سے کتا گیا ہوں یارب! کیا لطف انجمن کا جب دل ہی سمجھ گیا ہو
 شورشِ بھگاتا ہوں دل ٹھونڈتا ہے میرا ایسا سکوت جس پر تیرے ریجھیں منہ
 مرا ہوں خاشی بڑی آرزو ہے میری دہن میں کوہ کے آل چھوٹا سا جنھو پڑا
 از او فکر سے ہوں عزت میں گن گزارا دنیا کے عنکم دل سے کٹا نکل گیا ہو
 لذتِ سرودی چو پٹیوں کے چھپوں میں چشمے کی شورشوں میں باجا سا بیچ رہا ہو
 گل کی کلی چٹک کر پیغام دے کسی کا ساعتِ ذرا سا گویا مجھ کو جہاں نہا ہو
 ہو ہاتھ کا سر حنائی سبزے کا ہو بھونپنا شرمائے جس سے جلوتِ خلوت میں وہ ادھو
 مانوس اس قدر ہو صورت سے میری بس نتھے سے دل میں اُس کے کھنکھانے کچھ مرا ہو
 صاف بانٹھے نونِ جانب بُوٹے سر سے ہوں ندی کا صاف پانی تھویر لے رہا ہو
 ہو دل فریب ایسا کسار کا لفظ پانی بھی موج بن کر اٹھ اٹھ کے دیکھتا ہو

आगोश में ज़मीं की सोया हुआ हो सब्ज़ा
फिर फिर के झाड़ियों में पानी चमक रहा हो
पानी को छू रही हो झुक झुक के गुल की टहनी
जैसे हसीन कोई आईना देखता हो
मंहदी लगाय सूरज जब शाम की दुल्हन को
सुर्खी लिय सुनहरी हर फूल की क़बा हो
रातों को चलने वाले रह जायें थक के जिस दम
उम्मीद उन की मेरा टूटा हुआ दिया हो
बिजली चमक के उन को कुटिया मिरी दिखा दे
जब आस्मां पे हर सू बादल घिरा हुआ हो
पिछले पहर की कोयल, वह सुबह की मुअज़्ज़न
में उस का हम-नवा हूँ, वह मेरी हम-नवा हो
कानों प हो न मेरे दैरो-हरम का एहसां
रोज़न ही झोंपड़ी का मुझ को सहर-नुमा हो
फूलों को आए जिस दम शबनम वुजू कराने
रोना मिरा वुजू हो, नाला मिरी दुआ हो
इस ख़ाम्शी में जाएं इतने बुलन्द नाले
तारों के काफ़ले को मेरी सदा दरा हो
हर दर्द-मंद दिल को रोना मिरा रुला दे
बे-होश जो पड़े हैं शायद उन्हें जगा दे

آنکھوں میں میں کی سویا تو ہوا سو سبز
 پانی کو پھور ہی جھک جھک کے گل کی شہنی
 مہندی لگائے سو ج جب شام کی دُکھن کو
 راتوں کو چلنے والے ارچائیں تھک کے جس دم
 بجلی چمک کے اُن کو گنیا مری دکھائے
 پھیلے پھر کی کوئل، وہ صبح کی موذن
 کانوں پہ پہنڈ میسے دیر جو دم کا حال
 پھولوں کو آئے جس دم شب بزم وضو کرانے
 اس خاموشی میں جا میں اتنے بلند نالے
 پھر پھر کے جھاڑیوں میں پانی چمک ہا ہا
 جیسے حسین کوئی آئینہ دیکھتا ہا
 سُرخ لیے سنہری ہر پھول کی قب ہا
 آئینہ اُن کی سیہ اٹوٹا ہوا دیا ہا
 جب آسماں پہ ہر سُو بادل بھرا ہوا ہا
 میں اُس کا ہم نوا ہوں وہ میری ہم نوا ہا
 روزن ہی جھنوپٹری کا مجھ کو سحر نا ہا
 رونا مارا وضو ہو، نالہ مری دُعا ہا
 تاروں کے قافلے کو میری صدا دار ہا

ہر درہند دل کو رونا مارا رلا دے

بے ہوش جو پٹے ہیں شاید انھیں جگا دے

तराना—ए—हिन्दी

सारे जहां से अच्छा हिन्दूस्तां हमारा
हम बूलबुलें हैं इस की, यह गुलसितां हमारा
गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा
पूरबत वह सब से ऊंचा, हमसाया आस्मां का
वह संतरी हमारा, वह पास्बां हमारा
गोदी में खेलती हैं इस की हजार नदियां
गुलशन है जिन के दम से रश्क-ए-जिनां हमारा
ऐ आब-ए-रूद-ए-गंगा! वह दिन हैं याद तुझ को?
उतरा तरे किनारे जब कारवां हमारा
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दूस्तां हमारा
युनानो-मिस्रो-रूमा सब मिट गए जहां से
अब तक मगर है बाकी नामो-निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है रौशन दौर-ए-जमां हमारा
इक़्बाल! कोई महरम अपना नहीं जहां में
मअलूम क्या किसी को दर्द-ए-निहां हमारा

ترانہ ہندی

ہم بلبلیں ہیں اس کی یہ گستاخاں ہمارا	سائے جہاں سے اچھا ہندوستان ہمارا
سمجھو وہیں ہیں ہمیں بھی دل ہو جہاں ہمارا	غربت میں ہیں اگر ہم رہتا ہے دل وطن میں
وہ سنتری ہمارا، وہ پاسبان ہمارا	پر تہ وہ سب اونچا ہمسایہ آسمان کا
گلشن ہے جن کے دم سے رشکِ جناب ہمارا	گودی میں لھلھتی ہیں اس کی ہزاروں نیل
اُتر اترے کناے جب کا دریاں ہمارا	لے آئے پُورنگنا، وہ دن ہیں یاد تجھ کو؟
ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستان ہمارا	مذہب نہیں کھاتا آپس میں یہ کھنڈنا
اب تک طر ہے باقی نام و نشان ہمارا	یونانِ مصر و ماہِ بٹ لگتے جہاں سے
صدیوں کا ہے دشمنِ دورِ زماں ہمارا	کچھ بات ہے کہ ہستی مٹی نہیں ہاری

اقبال! کوئی محرم اپنا نہیں جہاں میں

معلوم کیا کسی کو درہنہاں ہمارا

जुगनू

जुगनू की रौशनी है काशाना-ए-चमन में
या शमअ जल रही है फूलों की अंजुमन में
आया है आस्मां से उड़ कर कुई सितारा
या जान पड़ गई है महताब की किरन में
या शब की सलतनत में दिन का स्फ़ीर आया
गुरबत में आ के चमका, गुमनाम था वतन में
तुकमा कुई गिरा है महताब की कबा का
ज़र्ज़ा है या नुमायां सूरज के परहन में
हुस्न-ए-कदीम की यह पौशीदा इक झलक है
ले आई जिस को कुदरत ख़ल्वत से अंजुमन में
छोटे से चांद में है ज़ुल्मत भी, रौशनी भी
निकला कभी गहन से, आया कभी गहन में

परवाना इक पतंगा, जुगनू भी इक पतंगा
यह रौशनी का तालिब, यह रौशनी सरापा

हर चीज़ को जहां में कुदरत ने दिल-बरी दी
परवाने को तपश दी, जुगनू को रौशनी दी
रंगीं-नवा बनाया मुर्ग़ान-ए-बे-ज़बां को
गुल को ज़बान दे कर तालीम-ए-ख़ाम्शी दी

جگنو

جگنو کی روشنی ہے کاشانہ چمن میں یا شمع جل رہی ہے پھولوں کی انجمن میں
 آیا ہے آسمان سے اڑکر کوئی ستارہ یا جان پڑکتی ہے مہتاب کی کرن میں
 یا شب کی سلطنت میں نون کا سفیر آیا غربت میں آ کے چمکا کلام تھا وطن میں
 تلمہ کوئی گرا ہے مہتاب کی قبا کا ذرہ ہے یا نایاں موج کے پیر میں
 حُسنِ قدیم کی یہ پوشیدہ اک جھلک تھی لے آئی جس کو قدرت خلوت سے انجمن میں
 چھوٹے سے چاند میں، ظلمت بھی روشنی بھی نکلا کبھی لہن سے آیا کبھی لہن میں

پروانہ اک تینکا جگنو بھی اک پتنگا

وہ روشنی کا طالب یہ روشنی سہرا

ہر چیز کو جہاں میں قدرت نے دلبر مئی پروانے کو تپش ہی جگنو کو روشنی
 زنجیں تو بن یا مرنے ان بے زبان کو گل کو زبان دے کر تسلیم خامشی دی

नज़्जारा-ए-श्फ़क़ की खूबी ज़वाल में थी
चमका के इस परी को थोड़ी सी ज़िन्दगी दी
रंगीं किया सहर को बांकी दुल्हन की सूरत
पहना के लाल जोड़ा शबनम की आर्सी दी
साया दिया शजर को, परवाज़ दी हवा को
पानी को दी रवानी, मौजों को बे-कली दी

यह इम्तियाज़ लेकिन इक़ बात है हनारी
जुगनू का दिन वही है जो रात है हमारी

हुस्न-ए-अज़ल की पैदा हर चीज़ में झलक है
इन्सां में वह सुखन है, गुन्चे में वह चतक है
यह चांद आस्मां का शायर का दिल है गोया
वां चांदनी है जो कुछ, यां दर्द की कसक है
अन्दाज़-ए-गुफ़्तगू ने धोके दिए हैं वरना
नग़मा है बू-ए-बुलबुल, बू फूल की चहक है
कसरत में हो गया है वहदत का राज़ मख़्फ़ी
जुगनू में जो चमक है, वह फूल में महक है

यह इख़तिलाफ़ फिर क्यों हंगामों का महल हो
हर शै में जबकि पिन्हां ख़ामोशी-ए-अज़ल हो



نظارہ شفق کی خوبی زوال میں تھی چمک کے اس پری کو تھوڑی سی ندگی تھی
 رنگیں کیا سحر کو بائلی دھن کی صورت پہنا کے لال جوڑا شبنم کی آرسی تھی
 سایہ دیا شجر کو، پرواز دی ہوا کو پانی کو دی روانی، موجوں کو بے مکی تھی

یہ استیاز لیکن اک بات ہے ہماری

جگنو کا دن ہی ہے جورات ہے ہماری

حسنِ ازل کی پیدا ہر چیز میں جھلک ہے انساں میں وہ سخن ہے، غنچے میں چمک ہے
 یہ چاند آسمان کا شاعر کا دل ہے لویا واں چاندنی ہے جو کچھ یاں درو کی لک ہے
 انداز گفتگو نے دھوکے دیے ہیں رنہ نغمہ ہے نوبے نبل، بو پھول کی چمک ہے
 کثرت میں ہو گیا ہے وحدت کا راز مخفی جگنو میں جو چمک ہے، وہ پھول میں مہک ہے

یہ اختلاف پھر کیوں منگاموں کا محل ہے

ہر شے میں جبکہ پہنا حفا مشابہ ازل ہے

हिन्दुस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत

चिश्ती ने जिस ज़मीं में पैग़ाम-ए-हक़ सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत का गीत गाया
तातारियों ने जिस को अपना वतन बनाया
जिस ने हिजाज़ियों से दशत-ए-अरब छुड़ाया
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

यूनानियों को जिस ने हैरान कर दिया था
सारे जहां को जिस ने इल्मो-हुनर दिया था
मट्टी को जिस की इक़ ने ज़र का असर दिया था
तुर्कों का जिस ने दामन हीरों से भर दिया था
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

टूटे थे जो सितारे फ़ारिस के आस्मां से
फ़िर ताब दे के जिस ने चमकाए कहक्शां से
वहदत की लै सुनी थी दुनिया ने जिस मकां से
मीर-ए-अरब को आई ठंडी हवा जहां से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

बन्दे कलीम जिस के, परबत जहां के सीना
नूह-ए-नबी का आ कर ठहरा जहां सफ़ीना
रिफ़अत है जिस ज़मीं की बाम-ए-फ़लक का ज़ीना
जन्नत की जिद्दगी है जिस की फ़ज़ा में जीना
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

ہندوستانی بچوں کا قومی گیت

چستی ہے جس زمیں میں سپاہِ حق بنایا نامک نے جس چمن میں وحدت کا گیت گایا

ماتاریوں نے جس کو اپنا وطن بنایا جس نے حجازیوں سے شتِ عرب بٹھرایا

میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

یونانیوں کو جس نے حیران کر دیا تھا سارے جہاں کو جس نے علم و نور دیا تھا

مٹی کو جس کی حق نے زر کا اثر دیا تھا ترکوں کا جس نے امن بڑوں سے بھردیا تھا

میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

ٹوٹے تھے جو ستارے فارس کے آسمان سے پھر تاب بڑے کے جس نے چمکائے لکھنؤ سے

وحدت کی لے سنی تھی دنیا نے جس مکان سے میرے عرب کے آئی ٹھنڈی ہوا جہاں سے

میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

بندے ظلم جس کے پر ت جہاں کھینا نوح نبی کا اگر ٹھہرا جہاں سفینا

رفت ہے جس زمیں کی باہم فلک کا زینا جنت کی زندگی ہے جس کی فضا میں چینا

میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

नया शिवाला

सच कह दूँ ऐ ब्रह्मन! गर तू बुरा न माने
तेरे सनम-कदों के बुत हो गए पुराने
अपनों से बैर रखना तू ने बुतों से सीखा
जंगो-जदल सिखाया वाइज़ को भी खुदा ने
तंग आ के मैं ने आखिर दौरों-हरम को छोड़ा
वाइज़ का वअज़ छोड़ा, छोड़े तारे फसाने

पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है
खाक-ए-वतन का मुझ को हर ज़र्रा देवता है

आ गैरियत के परदे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक़्श-ए-दुई मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुददत से दिल की बरती
आ, इक नया शिवाला इस देस में बना दें
दुनिया के तीर्थों से ऊंचा हो अपना तीर्थ
दामान-ए-आस्मां से इस का क्लस मिला दें

हर सुब्ह उठ के गाएं मंत्र वुह मीठे मीठे
सारे पुजारियों को मै पीत की पिला दें

शक्ति भी शांति भी भगतों के गीत में है
धारती के बासियों की मुक्ती प्रीत में है

نیا سوالا

سچ کہوں اے برہن لگرتو برانہ مانے تیرے صنم کدوں کئے بت ہو گئے پرانے
 اپنوں سے سیر لھنا تو نے بتوں سے کیا جنگِ جدل سکھایا واعظ کو بھی خدانے
 تنگ کے میں نے آخر ذریعہ جسم کو چھوڑا واعظ کا وعظ چھوڑا چھوٹے ترے فسانے

پتھر کی مورتوں میں سمجھتے تو خدا ہے

خالِ وطن کا مجھ کو ہر ذرہ دیوتا ہے

اسخیریت کے پرے ال با رہی اٹھاویا پھٹروں کو پھر بلا دیں نقشبند وئی مٹا دیں
 سونہی پڑی ہوئی ہے مدت کے دل کی بستی آ، ال نیا سوالا اس دیس میں بنا دیں
 دنیا کے تیرتھوں سے اونچا ہو اپ تیرتھ داماں آسماں سے اس کا کس بلا دیں
 ہر صبح اٹھ کے گائیں منتر وہ میٹھے میٹھے سائے پُجاریوں کو مے پست کی پلا دیں

شکستی بھی شانستی بھی بھگتوں کے لیت میں ہے

دھرتی کے باسیوں کی نکستی پریت میں ہے

अब्र

उठी फिर आज वह पूरब से काली काली घटा
स्याह पोश हुआ फिर पहाड़ 'सरबन' का
निहां हुआ जो रुख-ए-मिह ज़ेर-ए-दामन-ए-अब्र
हवा-ए-सर्द भी आई सवार-ए-तोसन-ए-अब्र
गरज का शोर नहीं है, ख़मोश है यह घटा
अजीब मै-कदा-ए-बे-ख़रोश है यह घटा
चमन में हुकम-ए-निशात-ए-मदाम लाई है
क़बा-ए-गुल में गुहर टांकने को आई है
जो फूल मह की गर्मी से सो चले थे, उठे
ज़मी की गोद में जो पेड़ के सो रहे थे, उठे
हवा के जोर से उभरा, बढ़ा, उड़ा बादल
उठी वह और घटा, लो, बरस पड़ा बादल

अजीब ख़ैमा है कुहसार के निहालों का
यहीं क़याम है वादी में फिरने वालों का

ابر

اٹھی پھر آج وہ پورے کالی کالی گھٹا
 سیاہ پوش ہوا پھر سپاڑ سر بن کا
 نہاں ہوا جو رخ ہر سر زبرد امن ابر
 ہولتے سرو بھی آئی سوار تو سن ابر
 گرج کا شور نہیں ہے خموش سے گھٹا
 عجیب کے کدق بن خروش ہے گھٹا
 چمن میں حکم شام لاتی ہے
 قبائے گل میں گن گن مٹنے کو آتی ہے
 جو پھول مگر لڑی سے سو چلے تھے اٹھے
 زمیں کی گود میں جو چڑھے سو ہے تھے اٹھے
 ہول کے زور سے ابھرا، بڑھا، اڑا بادل
 اٹھی وہ اوڑھٹا لو ابر بس ٹپا بادل

عجیب جیسے ہے لہسار کے نہالوں کا

یہ ہیں قیام ہو وادی میں پھرنے والوں کا

गज़ल

अनोखी वज़अ है सारे ज़माने से निराले हैं
यह आशिक कौन सी बस्ती के या रब रहने वाले हैं
इल्लाज-ए-दर्द में भी दर्द की लज़ज़त प मरता हूँ
जो थे छालों में कांटे, नोक-ए-सोज़न से निकाले हैं
फला फूला रहे या रब चमन मेरी उमीदों का
जिगर का खून दे दे कर यह बूटे मैं ने पाले हैं
रुलाती है मुझे रातों की खामोशी सितारों की
निराला इश्क है मेरा, निराले मेरे नाले हैं
न पूछो मुझ से लज़ज़त खानुमां-बरबाद रहने की
नशेमन सेकड़ों मैं ने बना कर फूंक डाले हैं
नहीं बेगानगी अच्छी रफ़ीक-ए-राह-ए-मन्ज़िल से
ठहर जा ऐ शरर! हम भी तो आख़िर मिटने वाले हैं
उमीद-ए-हूर ने सब कुछ सिखा रक्खा है वाइज़ को
यह हज़रत देखने में सीधे सादे, भोले भाले हैं
मिरे अश्आर ऐ इक़्बाल! क्यों प्यारे न हों मुझ को
मिरे टूटे हुए दिल के यह दर्द-अंगेज़ नाले हैं



ان کو بھی وضع ہے سارے زمانے سے نزلے ہیں
 علاج درد میں بھی رذ کی لذت پہ مرتا ہوں
 پھلا پھولا سے یارب چمن میری امیدوں کا
 رلاتی ہے مجھے اتوں کو خاموشی ستاروں کی
 نہ پوچھو مجھ سے لذت خانمان برباد رہنے کی
 نہیں گی گالی اچھی نسبتیں اہ نزل سے
 امید جوڑنے سب کچھ دکھار تھا ہے اعظا لو
 یہ عاشق کون سی بستی کے یارب رہنے والے ہیں
 جو تھے چھالوں میں کانٹے نول سون کے نکارے یہ
 جلد کا خون دے کر یہ ٹوبے نہیں پلے ہیں
 نرالا عشق ہے میرا نزلے میرے نلے ہیں
 نشتریں سکیڑوں میں بنا کر پھونک ڈالے ہیں
 ٹھہر جا کے شہرِ ریم بھی تو آخر تڑنے والے ہیں
 یہ حضرت دیکھنے میں صدمے سے بھول بھالے ہیں

مے لے شعرا لے اقبال کیوں بیارے نہ ہوں محلو
 مے لے ٹوٹے ہوئے دل کے یزدان گمیز نالے ہیں

गज़ल

जाहिर की आंख से न तमाशा करे कुई
हो देखना तो दीदा-ए-दिल वा करे कुई
मनसूर को हुआ लब-ए-गोया प्याम-ए-मौत
अब क्या किसी के इश्क़ का दअवा करे कुई
हो दीद का जो शौक़ तो आंखों को बंद रख
है देखना यही कि न देखा करे कुई
में इन्तिहा-ए-इश्क़ हूँ तू इन्तिहा-ए-हुस्न
देखे मुझे कि तुझ को तमाशा करे कुई
उज़्र-आफरीन-ए-जुर्म-ए-महब्बत है हुस्न-ए-दोस्त
महशर में उज़्र-ए-ताज़ा न पैदा करे कुई
छुपती नहीं है यह निगह-ए-शौक़ हम-नशी
फिर और किस तरह उन्हें देखा करे कुई
अड़ बैठे क्या समझ के भला तूर पर कलीम
ताक़त हो दीद की तो तकाज़ा करे कुई
नज़्जारे को यह जुंबश-ए-मियगां भी बार है
नरगिस की आंख से तुझे देखा करे कुई
खुल जाएं, क्या मजे हैं तमन्ना-ए-शौक़ में
दो चार दिन जो मेरी तमन्ना करे कुई



ظاہر کی آنکھ سے نہ تماشا کرے کوئی
 ہجو دیکھنا تو دیدہ دل واکرے کوئی
 منظور کو سچو لب کو یا پیام موت
 اب کیا کسی کے عشق کا دعویٰ کرے کوئی
 ہجو دید کا جو شوق تو آنکھوں کو بند کر
 ہے دیکھنا یہی کہ نہ دیکھا کرے کوئی
 میں انتہا کے عشق ہوں تو انتہا کے حسن
 دیکھے مجھے کہ تجھ کو تماشا کرے کوئی
 عذرا آفرینِ جرم مجھ سے حسن دوست
 محشر میں عذرا تازہ نہ پیدا کرے کوئی
 چھپتی نہیں ہے یہ نگہ شوق ہم نشین
 پھر اور کس طرح انھیں دیکھا کرے کوئی
 از بیٹھے کیا سمجھ کے بھلا طور پر حکیم
 طاقت ہجو دید کی تو تماشا کرے کوئی
 نطقے کو یہ غضبش مرثاں بھی بارے
 ز گس کی آنکھ سے تجھے دیکھا کرے کوئی

کھل جائیں کیا مئے ہیں تہائے شوق میں
 دو چار دن جو یہی سر ہی تماشا کرے کوئی

हकीक़त—ए—हुस्न

खुदा से हुस्न ने इक रोज़ यह सवाल किया
जहां में क्यूं न मुझे तू ने लाज़वाल किया
मिला जवाब कि तसवीर—ख़ाना है दुनिया
शब—ए—दराज़—ए—अदम का फ़साना है दुनिया
हुई है रंग—ए—तगैय्युर से जब नमूद इस की
वही हसीं है, हकीक़त ज़वाल है जिस की
कहीं करीब था, यह गुफ़तगू कमर ने सुनी
फ़लक पे आम हई, अख़्तर—ए—सहर ने सुनी
सहर ने तारे से सुन कर सुनाई शबनम को
फ़लक की बात बता दी ज़मीं के महरम को
भर आए फूल के आंसू प्याम—ए—शबनम से
कली का नन्हा सा दिल खून हो गया ग़म से
चमन से रोता हुआ मौसम—ए—बहार गया
शबाब सैर को आया था, सोगवार गया

حقیقتِ حُسن

خداے حُسن نے اک روز یہ سوال کیا
 جہاں میں کیوں نہ مجھے تُو نے لازوال کیا
 بلا جواب کہ تصویرِ حُسن ہے دنیا
 شبِ ہزارِ عہدِ مہم کا فسانہ ہے دنیا
 ہوئی ہے نگ تکِ تغیر سے جب سے اس کی
 وہی جس سے حقیقتِ زوال ہے جس کی
 کہیں قریباً، کیفیتِ گو قمر نے سُنی
 فلکِ پرِ مہم ہوئی، اخترِ سحر نے سُنی
 سحر نے مارے سے سن کر سنائی شبنم کو
 فلک کی بات بتا دی زمیں کے محرم کو
 بھر کے پھول کے آنسو پیامِ شبنم سے
 کلی کا نتھسا دلِ خون ہو گیا غنم سے
 چمن سے، و ما ہوا موسمِ بہار لیا
 شبِ بسیر کو آیا تھا سو گوار لیا

स्वामी राम तीर्थ

हम-बगल दरिया से है ऐ कतरा-ए-बे-ताब! तू
पहले गौहर था, बना अब गौहर-ए-नायाब तू
आह! खोला किस अदा से तू ने राज़-ए-रंगो-बू
में अभी तक हूँ असीर-ए-इम्तियाज़-ए-रंगो-बू
मिट के गोगा ज़िन्दगी का शोरिश-ए-महशर बना
यह शरारा बुझ के आतिश-ख़ाना-ए-आज़र बना
नफ़ी-ए-हस्ती इक करिश्मा है दिल-ए-आगाह का
'ला' के दरिया में निहां मोती है 'इल्लल्लाह' का
चश्म-ए-नाबीना से मख़्फ़ी मअनी-ए-अंजाम है
थम गई जिस दम तड़प, सीमाब सीम-ए-ख़ाम है
तोड़ देता है बुत-ए-हस्ती को इबराहीम-ए-इश्क
होश का दारू है गोया मस्ती-ए-तस्नीम-ए-इश्क

سوامی ام سیرتھ

سیرتھ نعل دریا سے ہے لے قطر قہ تباہ تو
 پہلے کو سیرتھ تھابن اب کو سیرتھ نایاب تو
 آہ بھو لاس او اسے تو نے راز رنگ بو
 میں ابھی تک ہوں سیرتھ تھیاز رنگ بو
 ہٹ کے غوغا زندگی کا شور شمسِ محشر بنا
 یہ شرارہ مجھ کے آتش خانہ آزر بنا
 نفی ہستی ال کر شمس ہے دل اکاہ کا
 لائے دریا میں نہاں مٹی ہے، الا اللہ کا
 چشمِ نابینا سے مخفی معنیِ نجبام ہے
 تھم لسی جس دم ٹرپ سیاب سیرتھ خام ہے
 توڑ دیتا ہے بُستہ سستی کو ابراہیم عشق
 پوشش کا ڈر ہے لویا سستی سیرتھ عشق

चांद और तारे

डरते डरते दम-ए-सहर से
तारे कहने लगे कमर से
नज़्जारे रहे वही फ़लक पर
हम थक भी गये चमक चमक कर
काम अपना है सुबहो-शाम चलना
चलना, चलना, मुदाम चलना
बे-ताब है इस जहां की हर शै
कहते हैं जिसे सकूं नहीं है
रहते हैं सितम-कश-ए-सफ़र सब
तारे, इन्सां, शजर, हजर सब

हो गा कभी ख़तम यह सफ़र क्या
मन्ज़िल कभी आय गी नज़र क्या

कहने लगा चांद, हम-नशीनो
ऐ मज़रअ-ए-शब के ख़ोशा-चीनो
जुंबश से है ज़िन्दगी जहां की
यह रसम कदीम है यहां की
है दोड़ता अशहब-ए-ज़माना
खा खा के तलब का ताज़ियाना
इस रह में मकाम बे-महल है
पौशीदा करार में अजल है
चलने वाले निकल गये हैं
जो ठहरे ज़रा, कुचल गये हैं

अंजाम है इस ख़राम का हुस्न
आगाज़ है इश्क़, इन्तिहा हुस्न

چاند اور تارے

ڈرتے ڈرتے دمِ سحر سے تارے کئے لگے دسترے
 نفاکے رہے وہی فلک پر ہم تھک بھی گئے چمک چمک
 کام اپنا ہے صبح و شام چلنا چلنا، چلنا، مدام چلنا

بے تاب ہے اس جہاں کی ہر شے کہتے ہیں جسے سکون نہیں ہے
 رہتے ہیں ستم کش سرفرب تارے انسان شبِ حجب سرب

ہو گا کبھی ستم یہ سحر کیا

منزل کبھی آئے گی نظر کیا

کئے لگا چاند، ہم نشینو اے مریخ شب کے خوش چہینو!
 جُنُبش سے ہے زندگی جہاں کی یہ رسم قدیم ہے یہاں کی
 ہے دوڑتا اشمب زمانہ کھا کھا کے طلب کا تازیانہ

اس وہ میں مہم بے محل ہے پوشیدہ قرار میں اصل ہے
 چلنے والے نکل گئے ہیں جو ٹھہرے ذرا، نکل گئے ہیں

انجام ہے اس خرام کا حُسن آغا ہے عشق، آہستہ حُسن

इन्सान

कुदरत का अजीब यह सितम है

इन्सान को राज-जू बनाया
राज इस की निगाह से छुपाया
बे-ताब है जौक आगही का
खुलता नहीं भेद जिन्दगी का

हैरत आगाज़ो - इन्तिहा है
अईने के घर में और क्या है

है गर्म-ए-ख़राम मौज-ए-दरिया
दरिया सू-ए-बहर जादा-पैमा
बादल को हवा उड़ा रही है
शानों पे उठाये ला रही है
तारे मस्त-ए-शराब-ए-तकदीर
जिन्दान-ए-फलक में पा-ब-जंजीर
खुर्शीद, वह आबिद-ए-सहर ख़ेज़
लाने वाला प्याम-ए-'बर-ख़ेज़'
मगरिब की पहाड़ियों में छुप कर
पीता है मै-ए-शफ़क़ का सागर
लज़ज़त-गीर-ए-वजूद हर शै
सरमस्त-ए-मै-ए-नमूद हर शै

कोई नहीं ग़म-गुसार-ए-इन्सा
क्या तल्ख़ है रोज़गार-ए-इन्सां!

انسان

قدرت کا عجیب یہ ستم ہے!

انسان کو راز جو بنایا راز اس کی نگاہ سے چھپایا

بے تاب ہے ذوقِ آگہی کا کھلتا نہیں بھیدِ زندگی کا

حیرتِ آفاذ و انتہا ہے

اسینے کے لہر میں اور کیا ہے

ہے گرم حرامِ موجِ دریا دریا سوتے بحرِ جاوہِ پیمیا

بادل کو چوا اڑا رہی ہے شانوں پہ اٹھتے لا رہی ہے

تارے مستِ شرابِ تقدیر زندانِ فلک میں پا بہ زنجیر

خورشید، وہ عابدِ سحرِ خیز لانے والا پیامِ 'برخیز'

مغرب کی پہاڑیوں میں چھپ کر پیتا ہے مے شفق کا ساغر

لذتِ گیسرِ وجود ہر شے سرست مے نمود ہر شے

کوئی نہیں غم گسارِ انساں

کیا تلخ ہے روزگارِ انساں!

गज़ल

मार्च १९०७

ज़माना आया है बे-हिजाबी का, आम दीदार-ए-यार हो गा
सकूत था परदा-दार जिस का, वह राज़ अब आश्कार हो गा
कभी जो आवारा-ए-जनूं थे, वह बस्तियों में फिर आ बसेंगे
ब्रहना-पाई वही रहे गी, मगर नया ख़ार-ज़ार हो गा
दियार-ए-मगरिब के रहने वालो! खुदा की बस्ती दुकां नहीं है
खरा जिसे तुम समझ रहे हो, वह अब ज़र-ए-कम-अयार हो गा
तुम्हारी तहज़ीब अपने खंजर से आप ही खुद-कुशी करे गी
जो शाख़-ए-नाज़ुक पे आशियाना बने गा, ना-पायदार हो गा
सफ़ीना-ए-बर्ग-ए-गुल बना ले गा काफ़िला मूर-ए-नातवां का
हज़ार मौजों की हो कशाकश मगर यह दरिया से पार हो गा
चमन में लाला दिखाता फिरता है दाग़ अपना कली कली को
यह जानता है कि इस दिखावे से दिल-जलों में शुमार हो गा
खुदा के आशिक़ तो हैं हज़ारों, बनों में फिरते हैं मारे मारे
में उस का बन्दा बनों गा जिस को खुदा के बन्दों से प्यार हो गा
में जुल्मत-ए-शब में ले के निकलों गा अपने दरमांदा कारवां को
शरर-फ़िशां हो गी आह मेरी, नफ़स मिरा शुअला-बार हो गा
न पूछ इक़बाल का ठिकाना, अभी वही कैफ़ियत है उस की
कहीं सर-ए-रह-गुज़ार बैठा सितम-कश-ए-इन्तिज़ार हो गा

مارچ ۱۹۰۷ء

زمانہ آیا ہے بے حجابی کا، عام دیدار یار ہو گا
سکوتِ تباہِ پردہ دار جس کا، وہ راز اب آشکار ہو گا

کبھی جو آوازہ جنوں تھے ہو بستیوں میں پھر آئیں گے
بہتر سپائی وہی رہے گی، ہلکے نیاحن رزار ہو گا

دیار سفر کے رہنے والو! خدا کی بستی دکاں نہیں ہے
کھرا جسے تم سمجھ رہے ہو وہ اب زبرِ کم عیار ہو گا
تعماری تہذیب اپنے پنجہ سے آپ سچی روشنی لے لی
جوشِ شاخِ نازک پہ آتشِ یاز بنے گا، ناپائدار ہو گا
غیبتِ برگِ گل بنائے گا قافلہ نورا تو ان کا
ہزار موجوں کی چوٹ کششِ مگر یہ دریا سے پار ہو گا
چمن میں لالہ دکھاتا پھرتا ہے داغِ اپنی کلی کلی کو
یہ جانتا ہے کہ اس دکھاوے سے نل جلوں میں شمار ہو گا

خدا کے عاشق تو ہیں ہزاروں بنوں میں پھرتے ہیں مارے جا رہے
میں اُس کا بند بنوں گا جس کو خدا کے بندوں سے پیار ہو گا
میں نقلتِ شب میں لے کے نکلوں گا اپنے در ماندہ کا دریا کو

شرِ ریشاں چو کی آہِ سہری نفیس سے اشعلہ بار ہو گا
نہ پوچھو قبل کا ٹھکانا، ابھی وہی کیفیت ہے اُس کی
کہیں سرگہ گزار بیش اس تم کشنِ تہن ر ہو گا

गज़ल

ज़िन्दगी इन्सां की इक़दम के सिवा कुछ भी नहीं
दम हवा की मौज है, रम के सिवा कुछ भी नहीं
गुल तबस्सुम कह रहा था ज़िन्दगानी को, मगर
शमअ बोली, गिर्या-ए-ग़म के सिवा कुछ भी नहीं
राज़-ए-हस्ती राज़ है जब तक कुई महरम न हो
खुल गया जिस दम तो महरम के सिवा कुछ भी नहीं
जायरान-ए-कअबा से इक़बाल यह पूछे कुई
क्या हरम का तुहफ़ा ज़म-ज़म के सिवा कुछ भी नहीं



साक़ी

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है
मज़ा तो जब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी
जो बादा-कश थे पुराने, वह उठते जाते हैं
कहीं से आब-ए-बक़ा-ए-दवाम ले साक़ी
कटी है रात तो हंगामा-गुस्तरी में तिरी
सहर करीब है, अल्ला का नाम ले साक़ी





زندگی انساں کی الوم کے سوا کچھ بھی نہیں
 دم سوا کی سوج ہے رم کے سوا کچھ بھی نہیں
 گل تبسم کہہ ہاہت زندگانی کو ملے
 شمع بولی ہر یہ عنم کے سوا کچھ بھی نہیں
 ماہرستی راز ہے جب تک کوئی محرم نہ ہو
 کھل گیا جن دم تو محرم کے سوا کچھ بھی نہیں
 زائر ابن کعب سے قبل یہ پوچھے کوئی
 کیا حرم کا تحفہ نہ فرم کے سوا کچھ بھی نہیں



ساتی

نشر پلا کے لڑانا تو سب کو آتا ہے
 مزا تو جب ہے لگ برتوں کو تھام لے ساتی
 جواہر کش تھے پڑانے وہ اٹھتے جاتے ہیں
 کہیں سے اب بچائے دوام لے ساتی!
 کٹی ہے رات تو ہنہنگہ گزرتی میں تری
 سحر قریب ہے اللہ کا نام لے ساتی!



राम

लबरेज़ है शराब-ए-हकीकत से जाम-ए-हिन्द
सब फ़ल्सफ़ी हैं ख़ित्ता-ए-मगरिब के राम-ए-हिन्द
यह हिन्दियों की फ़िक्र-ए-फ़लक-रस का है असर
रिफ़ात में आस्मां से भी ऊंचा है बाम-ए-हिन्द
इस देस में हुए हैं हज़ारों मलक सरिशत
मशहूर जिन के दम से है दुनिया में नाम-ए-हिन्द
है राम के वुजूद पे हिन्दूस्तां को नाज़
अहल-ए-नज़र समझते हैं इस को इमाम-ए-हिन्द
एजाज़ उस चराग़-ए-हिदायत का है यही
रौशन-तर-अज़-सहर है ज़माने में शाम-ए-हिन्द
तलवार का धनी था, शुजाअत में फ़र्द था
पाकीज़गी में, जोश-ए-महबबत में फ़र्द था

رام

لبریز ہے شرابِ حقیقت سے جا ہند
 یہ ہند یوں کے فلکِ فلک رس کا ہے اثر
 سب سنی ہیں خطہ منور کے امام ہند
 مشور جن کے دم سے ہے دنیا میں نام ہند
 اس دس میں عورت ہیں ہزاروں ناکِ شرت
 ہے ام کے جو وہ ہند و ستان کو نماز
 اہلِ لطف سب سمجھتے ہیں اس کو امام ہند
 رعنا تن از سحر ہے زمانے میں شام ہند
 اعجاز اس چراغِ ہدایت کا ہے یہی

تلوار کا دھنی تھا شجاعت میں فرد تھا
 پالیزی میں جو ششِ محبت میں فرد تھا

नानक

कौम ने पैगाम-ए-गोतम की ज़रा परवा न की
कद्र पहचानी न अपने गौहर-ए-यक-दाना की
आह! बद-किस्मत रहे आवाज़-ए-हक़ से बे-खबर
गाफ़िल अपने फल की शीरीनी से होता है शजर
आश्कार उस ने किया जो ज़िन्दगी का राज़ था
हिन्द को लेकिन खयाली फ़ल्सफ़े पर नाज़ था
शमअ-ए-हक़ से जो मुनव्वर हो यह वह महफ़िल न थी
बारेशा-ए-रहमत हुई लेकिन ज़मीं काबिल न थी
आह! शूदर के लिय हिन्दूस्तां ग़म-ख़ाना है
दर्द-ए-इन्सानी से इस बस्ती का दिल बे-गाना है
ब्रह्मन सरशार है अब तक मै-ए-पिदांर में
शमअ-ए-गोतम जल रही है महफ़िल-ए-अग़यार में
बुत-कदा फिर बाद मुद्दत के मगर रौशन हुआ
नूर-ए-इबराहीम से आज़र का घर रौशन हुआ
फिर उठी आख़िर सदा तौहीद की पंजाब से
हिन्द को इक़ मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख़्वाब से

نانا

قوم نے سپینا تم کی درازا نہ کی
 اہ آہ بگمت ہے آواز حق سے خبر
 اشکاراں نے لیا جو زندگی کا راز تھا
 شمع حق سے جو منور ہو یہ وہ محفل نہ تھی
 درو انسانی سے اسستی کا دل کیا ہے
 برہمن سرشک ہے اب تک ہے چنڈا میں
 نور ابراہیم سے ازر کا طہر روشن ہوا
 بت لہ پھر بعدت کے مگر روشن ہوا

پھر اٹھی آفر صدا توحید کی پنجاب سے
 ہند کو ال مرد کال نے جگایا خواب سے

पैवस्ता रह शजर से, उमीद-ए-बहार रख

डाली गई जो फ़स्ल-ए-ख़िज़ां में शजर से टूट
मुम्किन नहीं, हरी हो सहाब-ए-बहार से
है लाज़वाल अहद-ए-ख़िज़ां उस के वास्ते
कुछ वास्ता नहीं है उसे बर्गो-बार से
है तेरे गुलस्तां में भी फ़स्ल-ए-ख़िज़ां का दौर
ख़ाली है जेब-ए-गुल ज़र-ए-कामिल अयार से
जो नगमा-ज़न थे ख़लवत-ए-औराक़ में तय्यूर
रुख़सत हुए तिरे शजर-ए-साया-दार से
शाख़-ए-बुरीदा से सबक़-अंदोज़ हो कि तू
ना-आशना है कायदा-ए-रोज़ागार से
मिल्लत के साथ राबिता-ए-उस्तवार तख़
पैवस्ता रह शजर से उमीद-ए-बहार रख!

پیوستہ رہ شجر سے ہمیں بہار رکھ

ڈال لسی جو فصل خزاں میں شجر سے ٹوٹ
ممكن نہیں ہری پو سحاب بہار سے
ہے لازوال عہد خزاں اس کے واسطے
کچھ واسطہ نہیں ہے اُسے برباگ سے
ہے تیرے گھٹاں میں بھی فصل خزاں کا دور
خالی ہے جب گل زبر کا لعی سے
جو نغمہ زن تھے خلوت اوراق میں طیور
رخصت ہوتے تھے شجر بارید سے
شبخ بڑیدہ سے سبق اندوز ہو کہ تو
نا آشنا ہے ت اعدہ روزگار سے

ہمت کے ساتھ رابطہ استوار رکھ

پیوستہ رہ شجر سے ہمیں بہار رکھ

फूल

तुझे . क्यूं फिक्र है ऐ गुल! दिल-ए-सद-चाक बुलबुल की
तू अपने पैरहन के चाक तो पहले रफू कर ले
तमन्ना आबरू की हो अगर गुलज़ार-ए-हस्ती में
तो कांटों में उलझ कर ज़िन्दगी करने की खू कर ले
सनोबर बाग में आज़ाद भी है, पा-ब-गुल भी है
इन्ही पाबन्दियों में हासिल आज़ादी को तू कर ले
तुनक बख़्शी को इस्तगना से पैगाम-ए-ख़िजालत दे
न रह मिन्नत-कश-ए-शबनम, निगूं जामो-सबू कर ले
नहीं यह शान-ए-खुद-दारी, चमन से तोड़ कर तुझ को
कुई दस्तार में रख ले, कुई ज़ेब-ए-गुलू कर ले
चमन में गुन्चा-ए-गुल से यह कह कर उड़ गई शबनम
मज़ाक-ए-जौर-ए-गुलचीं हो तो पैदा रंगो-बू कर ले
अगर मन्ज़ूर हो तुझ को ख़िज़ां ना-आशाना रहना
जहान-ए-रंगो-बू से, पहले क़तअ-ए-आर्जू कर ले
इसी में देख, मुज़मिर है कमाल-ए-ज़िन्दगी तेरा
जो तुझ को ज़ीनत-ए-दामन कुई आईना-रू कर ले

پھول

تجھے کیوں فکر ہے اے گلِ دل چاکِ بیل کی
 تو اپنے پیر پرین کچال تو پہلے زوکر لے
 متا ابرو کی ہوا رکھزار ہستی میں
 تو کانٹوں میں الجھ کر زندگی لے لی جو کر لے
 صنوبر باغ میں ازاد بھی ہے پاپا یہ گل بھی ہے
 انھی پاپنوں میں حاصل آزادی کو تو کر لے
 تنگ بخشی کو استغنا ہے پیغامِ حیات و
 نہ رہت کشتِ شبنم بنوں جام و سبو کر لے
 نہیں تے شانِ حرم سے توڑ کر تجھ کو
 کوئی دستار میں لکھے کوئی یہ کلو کر لے
 چمنِ غنچ پہ گل سے یہ لہ لہاڑا لسی شبنم
 مذاق جو کھینچ تو پیسا رنگ و بو کر لے
 اگر منظر ہو تجھ کو خزانِ آشتِ نارہنا
 جہاں رنگ و بو سے پہلے قطع آرزو کر لے

اسی میں دیکھ بھڑ سے جمالِ نملی تیرا
 جو تجھ کو زینتِ امین کوئی آسے نہ زوکر لے

सर्माया—ओ—महनत

बन्दा—ए—मज़दूर को जा कर मिरा पैगाम दे
खिज़्र का पैगम क्या, है यह प्याम—ए—कायनात
ऐ कि तुझ को खा गया सर्माया—दार—ए—हीला—गर
शाख़—ए—आहू पर रही सदियों तलक तेरी बरात
दस्त—ए—दौलत—आफ़रीं को मुदज़ यूं मिलती रही
अहल—ए—सरवत जैसे देते हैं ग़रीबों को ज़कात
नस्ल, कौमियत, कलीसा, सल्तनत, तहज़ीब, रंग
ख़्वाजगी ने ख़ूब चुन चुन के बनाए मुस्किरात
कट मरा नादां ख़्याली देवताओं के लिये
सुक्र की लज़्जत में तू लुटवा गया नक़द—ए—हयात
मक्र की चालों से बाज़ी ले गया सर्माया—दार
इन्तिहा—ए—सादगी से खा गया मज़दूर मात

उठ कि अब बज़्म—ए—जहां का और ही अंदाज़ है
मशारिको—मगरिब में तेरे दौर का अगाज़ है

سرمایہ و محنت

بندۂ مزدور کو جب کہ مراپینام نے
 خضر کا سینا کیا ہے یہ پیام کائنات
 لے کہ تجھ کو لھالیا سرمایہ دار جس نے
 شاخِ اہنہ پر رہی صدیوں ملک تیری برات
 دستِ دولت آسیریں کو مزدوریوں ملتی رہی
 اہل ثروت جیسے دیتے ہیں غریبوں کو زکات
 نسل، قومیت، کلیسا، سلطنت، تہذیب، رنگ
 خواجگی نے خوب چن چن کے بنائے سبکدات
 کٹ مرناداں خیالی دیوتاؤں کے لیے
 سکر کی لذت میں تو لٹوا کیا نعتِ حیات
 مگر کی چالوں سے بازی لے لیا سرمایہ دار
 انتہائے سادگی سے لھالیا مزدور مات
 اٹھ کہ اب بزمِ جہاں کا اور ہی انداز ہے
 مشرق و مغرب میں تیرے دور کا آغاز ہے

गज़ल

फिर बाद-ए-बहार आई, इक़बाल ग़ज़ल ख्वां हो
गुन्चा है अगर गुल हो, गुल है तो गुलिस्तां हो
तू खाक की मुट्ठी है, अजज़ा की हारत से
बरहम हो, परीशां हो, वुसअत में बयाबां हो
तू जिन्स-ए-महब्बत है, कीमत है गिरां तेरी
कम-माया है सौदा-गर, इस देस में अरज़ां हो
क्यूं साज़ के परदे में मस्तूर हो ले तेरी
तू नगमा-ए-रंगीं है, हर गोश पे उरयां हो
ऐ रह-रव-ए-फ़रजाना! रसते में अगर तेरे
गुलशन है तो शबनम हो, सहरा है तो तूफ़ां हो
सामां की महब्बत में मुज़मिर है तन-आसानी
मक़सद है अगर मन्ज़िल, ग़ारत-गर-ए-सामां हो



پھر باد بہار آئی، اقبال غزل خواں ہو
 تو خال کی مٹھی ہے اجڑالی حرارت سے
 تو جس محبت ہے قیمت ہے لراں تیری
 کیوں ساڑھے پردے میں ستور ہو لے تیری
 لے ہر طرف نراندہ راستے میں لرتیرے
 غنچہ سے گل گل ہو گل ہے تو گلستان ہو
 برسم ہو پریشان ہو، وسعت میں بیابان ہو
 کم مایہ ہیں سوا لڑا س میں ازان ہو
 تو نعمتہ زنجیں سے گہر کوشش غیبیان ہو
 گلشن سے تو شبنم ہو صحرا ہے تو طوفان ہو

سامان کی محبت میں ضم ہے تن آسانی
 مقصد ہے گل منزل غارت لبر سامان ہو

गज़ल

कभी ऐ हकीकत-ए-मुन्तज़र! नज़र आ लिबास-ए-मजाज़ में
कि हज़ारों सजदे तड़प रहे हैं मिरी जबीन-ए-नयाज़ में
तरब-आश्ना-ए-खरोश हो, तू नवा है महरम-ए-गोश हो
वह सरोद क्या कि छुपा हुआ हो सकूत-ए-परदा-ए-साज़ में
तू बचा बचा के न रख इसे, तिरा आइना है वह आइना
कि शिकस्ता हो तो अज़ीज़-तर है निगाह-ए-आइना साज़ में
दम-ए-तौफ़ कर्मक-ए-शमअ ने यह कहा कि वह असर-ए-कुहन
न तिरी हिकायत-ए-सोज़ में, न मिरी हदीस-ए-गुदाज़ में
न कहीं जहां में अमां मिली, जो अमां मिली तो कहां मिली
मिरे जुरम-ए-ख़ाना-ख़राब को तिरे अफ़व-ए-बन्दा-नवाज़ में
न वह इश्क़ में रहीं गर्मियां, न वह हुस्न में रहीं शोख़ियां
न वह ग़ज़नवी में तड़प रही, न वह ख़म है जुल्फ़-ए-अयाज़ में
जो मैं सर-ब-सजदा हुआ कभी तो ज़र्मी से आने लगी सदा
तिरा दिल तो है सनम-आश्ना, तुझे क्या मिले गा नमाज़ में



کبھی اے حقیقت منتظر، نظرِ الباسِ محالیں
کہ ہزاروں سجدے تپ رہے ہیں جسے نیا میں

طربِ آشنائے خروشن، تو نوائے محرمِ خوشی
وہ سرو کیا کہ چھپا ہوا سو کھوت پڑے سائیں

تو پچھلے لنگے رکھ اسے ترا آئندہ سے وہ آئندہ
کہ شکستہ ہو تو عزیز تر ہے نگاہ آئندہ ساز میں

وہ طوفِ کاشمیر نے یہ کہا کہ وہ اثرِ گمن
نہ ترمیمی حیاتِ سوز میں نہ مری حیاتِ کداز میں

نہ کہیں جہاں میں امان ملی جو امان ملی تو کمان ملی
مے خجربم خانہ خراب کو تے عرفو بندہ نواز میں

نہ وہ عشق میں رہیں گم میاں نہ وہ جن میں رہیں شوقِ خیا
نہ وہ غزنوی میں تپ رہی نہ وہ نجم ہے لطفِ ایاز میں

جو میں سرسجدہ ہوا کبھی تو زمیں سے آنے لگی صدا

ترا دل تو ہے صنمِ آشنائے تجھے کیا ملے گا نماز میں

गज़ल

परीशां हो के मेरी खाक आखिर दिल न बन जाए
जो मुश्किल अब है या रब! फिर वही मुश्किल न बन जाए
न कर दें मुझ को मजबूर-ए-नवा फिरदौस में हूरें
मिरा सोज़-ए-दरूं फिर गर्मी-ए-महफ़िल न बन जाए
कभी छोड़ी हुई मन्ज़िल भी याद आती है राही को
खटक सी है जो सीने में, ग़म-ए-मन्ज़िल न बन जाए
बनाया इश्क़ ने दरिया-ए-ना-पैदा-करां मुझ को
यह मेरी खुद-निगह-दारी मिरा साहिल न बन जाए
कहीं इस आलम-ए-बे-रंगो-बू में भी तलब मेरी
वही अफ़साना-ए-दुंबाला-ए-महमिल न बन जाए
उरुज-ए-आदम-ए-खाकी से अन्जुम सहमे जाते हैं
कि यह टूटा हुआ तारा मह-ए-कामिल न बन जाए



پریشان ہو گئے میری خال آخروں نے بن جائے
 نہ لڑیں مجھ کو مجبور نہو افروں میں حُر ہیں
 جو مشکل اب پیار بھری ہوئی شکل نہ بن جائے
 کبھی چھوٹی ہوئی منزل بھی آتی ہے ایسی تو
 لٹک سی جاوے میں غم منزل نہ بن جائے
 بنایا عشق نے دریائے نامید اکرال مجھ کو
 یہ میری خود نگہداری مرا حاصل نہ بن جائے
 وہی افسانہ ڈنبا گیسٹ نہ بن جائے
 کہیں اس عالم بے رنگ و بو میں بھٹک نہ میری

عروجِ آدمِ خالی سے انجم سمے جاتے ہیں
 کہ یہ ٹوٹا ہوا تارا میرا کامل نہ بن جائے

गज़ल

फिर चराग-ए-लाला से रौशन हुए काहो-दमन
मुझ को फिर नगमों पे उकसाने लगा मुर्ग-ए-चमन
फूल है सहारा में या परयां कतार अन्दर कतार
उदे उदे, नीले नीले, पीले पीले पैरहन
बर्ग-ए-गुल पर रख गई शबनम का मोती बाद-ए-सुब्ह
और चमकाती है इस मोती को सूरज की किरन
हुस्न-ए-बे-परवा को अपनी बे-नकाबी के लिए
हों अगर शहरों से बन प्यारे तो शहर अच्छे कि बन
अपने मन में डूब कर पा जा सुराग-ए-ज़िन्दगी
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन, अपना तो बन
मन की दुनिया! मन की दुनिया सोज़ो-मरती, जज़्बो-शौक
तन की दुनिया! तन की दुनिया सूदो-सौदा, मकरो-फन
मन की दौलत हाथ आती है तो फिर जाती नहीं
तन की दौलत छांव है, आता है धन, जाता है धन
मन की दुनिया में न पाया मैं ने अफ़रंगी का राज
मन की दुनिया में न देखे मैं ने शैखो-ब्रहमन
पानी पानी कर गई मुझ को कलन्दर की यह बात
तू झुका जब गैर के आगे, न मन तेरा न तन



پھر چراغِ لالہ سے روشن ہوتے کوہ و دامن
 مجھ کو پھر نغموں پہ اُکسانے لگا مرغِ خمین

پھول ہیں صحرا میں یا پرپایں قطار اندہ قطار
 اُوڑوئے نیلے نیلے، سیلے سیلے پیر پہ

بر بلبل پر لکھ لکھی شبِ نیم کا موتی با صبح
 اور چمکاتی ہے اس موتی کو سوج کی کرن

حُسن بے پروا کو اپنی بے نقابئی کے لیے
 ہولِ کرشموں کے سارے تو شہر اچھے کہ بن

اپنے سن میں ڈوب کر پاجا سراغِ زندگی
 تو اگر میرا نہیں بتانا نہ بن اپنا تو بن

سن کی دنیا میں اپنی دنیا سووستی جذبِ وثوق
 تن کی دنیا اتن کی دنیا سوو دوسوا ملو و فن

سن کی دولت ہاتھ آتی ہے تو پھر جاتی نہیں
 تن کی دولت چھاؤں کے آٹانے ہن جاتا ہے جن

سن کی دنیا میں نہ پایا میں نے افرتی کاراج
 سن کی دنیا میں نہ دیکھے میں نے شیخ و برہن

پانی پانی لڑ لڑتی مجھ کو قلندر کی یہ بات
 تُو جھکا جب خمیر کے آگے نہ تیرا نہ تن

गज़ल

ख़िरद के पास ख़बर के सिवा कुछ और नहीं
तिरा इलाज नज़र के सिवा कुछ और नहीं
हर इक मक़ाम से आगे मक़ाम है तेरा
हयात ज़ौक़-ए-सफ़र के सिवा कुछ और नहीं
गिरां-बहा है तो हिफज़-ए-खुदी से है वरना
गुहर में आब-ए-गहर के सिवा कुछ और नहीं
रगों में गर्दिश-ए-खूं है अगर तो क्या हासिल
हयात सोज़-ए-जिगर के सिवा कुछ और नहीं
उरूस-ए-लाला! मुनासिब नहीं है मुझ से हिजाब
कि मैं नसीम-ए-सहर के सिवा कुछ और नहीं
जिसे कसाद समझते हैं ताज़िरान-ए-फ़रंग
वह शै मताअ-ए-हुनर के सिवा कुछ और नहीं
बड़ा करीम है इक़बाल-ए-बे-नवा लेकिन
अता-ए-शोअला शरर के सिवा कुछ और नहीं



خون کے پاسخ کے سوا کچھ اور نہیں
 ہر اہم مقام کے لئے مقام ہے تیرا
 کہ ان بہانے تو جھنڈے خود ہی سے ہرگز
 رگوں میں گردشِ خون سے گھر تو کیا حاصل
 عروسِ لالہ! مناسب نہیں مجھ سے بجا
 جسے کسکتے تھے ہیں تاجِ برفِ نازک
 بڑا لیم ہے قبیلِ بنو لیمین

ترا علاجِ نطفہ کے سوا کچھ اور نہیں
 حیاتِ ذوقِ ہنر کے سوا کچھ اور نہیں
 گھر میں آگ لہنے کے سوا کچھ اور نہیں
 حیاتِ سوزِ جگر کے سوا کچھ اور نہیں
 کہ میں نیم سحر کے سوا کچھ اور نہیں
 وقتِ متاعِ ہنر کے سوا کچھ اور نہیں
 عطائے شعلہ شکر کے سوا کچھ اور نہیں

गज़ल

सितारों से आगे जहां और भी हैं
अभी इश्क़ के इम्तिहां और भी हैं
तही, जिन्दगी से नहीं यह फ़जाएं
यहां सैकड़ों कारवां और भी हैं
कनाअत न कर आलम-ए-रंगो-बू पर
चमन और भी आशियां और भी हैं
अगर खो गया इक़ नशैमन तो क्या ग़म
मक़ामात-ए-आहो-फ़ुगां और भी हैं
तू शार्हीं है, परवाज़ है काम तेरा
तिरे सामने आसमां और भी हैं
इसी रोज़ो-शब में उलझ कर न रह जा
कि तेरे ज़मानो-मकां और भी हैं
गए दिन कि तनहा था मैं अंजुमन में
यहां अब मिरे राज़-दां और भी हैं



تیاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں
ابھی عشق کے آتھماں اور بھی ہیں
تہی زندگی سے نہیں فیضائیں
یہاں سیلڑوں کا رواں اور بھی ہیں
قناعت نہ کرے عالم رنگ و بو پر
چمن اور بھی اشیاں اور بھی ہیں
الہ لھولیا ان شیعین تو کیا نسیم
مقاماتِ آہ و فغاں اور بھی ہیں
تو شاپیں بنے پرواز سے کام میرا
ترے سامنے سماں اور بھی ہیں
اسی روز و شب میں الجھ لڑ لڑ چکا
کہ تیرے زمان مکان اور بھی ہیں
کئے دن کہ تنہا تھا میں بوسن میں
یہاں اب کے رازواں اور بھی ہیں

गज़ल

करेंगे अहल-ए-नज़र ताज़ा बस्तियां आबाद
मिरी निगाह नहीं सू-ए-कूफ़ा-ओ-बग़दाद
यह मदरिसा, यह जवां, यह सपूरो-रअनाई
इन्ही के दम से है मै-ख़ाना-ए-फ़रंग आबाद
न फ़लस्फी से, न मुल्ला से है गरज़ मुझ को
यह दिल की मौत, वह अन्देशा-ए-नज़र का फ़साद
फ़कीह-ए-शहर की तहकीर! क्या मजाल मिरी
मगर यह बात कि मैं ढूँढता हूँ दिल की कुशाद
ख़रीद सकते हैं दुनिया में इशरत-ए-परवेज़
ख़ुदा की देन है सरमाया-ए-ग़म-ए-फ़रहाद
किये हैं फ़ाश रमूज-ए-कलन्दरी मैं ने
कि फ़िक्र-ए-मदरिसा-ओ-ख़ानकाह हो आज़ाद
रिशी के फ़ाकों से टूटा न ब्रह्मन का तलिस्म
असा न हो तो कलीमी है कार-ए-बे बुन्याद



کریں گے اہل نظر تازہ بستیاں آباد
 یہ مدرسہ یہ جوان یہ سرور و عسائی
 نہ فلسفی سے نہ ملا سے ہے عرض مجھ کو
 فقیر شہر کی تختیٰ لکھ لیا مجال مری
 خرم کیسے ہیں دنیا میں عشرت پرور
 کیے ہوش رُخس رُخس رُخس رُخس رُخس
 رشی کے فاقوں کو مانا نہ برہمن کا طلسم
 مری گناہ نہیں سوائے کوفہ و بعدا
 انھی کے دم ہے مہینا نہ فرناک آباد
 یہ دل کی موت وہ اہدیش و ظن کافر
 مگر یہ بات کہ میں ٹھٹھا تو ہوں دل کی کشتا
 خدا کی دین ہے ساری عین فرما
 کہ منکر مدد و خانقاہ ہوا ازا
 عصا نہ ہو تو ظہیمی ہے کار بے بنیاد

फ़रमान—ए—ख़ुदा

(फ़रिश्तों से)

उट्टो! मिरी दुनिया के गरीबों को जगा दो
काख़-ए-उमरा के दरो-दीवार हिला दो
गर्माओ गुलामों का लहू सोज़-ए-यर्कीं से
कुन्जश्क-ए-फ़रोमाया को शार्ही से लड़ा दो
सुलतानी-ए-जमहूर का आता है ज़माना
जो नक्श-ए-कुहन तुम को नज़र आए मिटा दो
जिस खेत से दहकां को मुयस्सर न हो रोज़ी
उस खेत के हर ख़ोशा-ए-गन्दम को जला दो
क्यूं ख़ालिको-मख़लूक में हायल रहें परदे
पीरान-ए-कलीसा को कलीसा से उठा दो
हक़ रा ब-सजूदे, सनमां रा ब-तवाफ़े
बहतर है चरागा-ए-हरमो-दैर बुज़्जा दो
मैं ना-ख़ुशो-बे-ज़ार हूं मरमर की सिलों से
मेरे लिये मट्टी का हरम और बना दो
तहज़ीब-ए-नवी कार-गह-ए-शीशा-गरां है
आदाब-ए-जुनुं शायर-ए-मशरिफ़ को सिखा दो

فرمانِ خدا (فرشتوں سے)

اُتھو! مری دنیا کے غریبوں کو بچا دو
 لڑکھو! غلاموں کا لہو سوزِ یقیں سے
 سلطانِ جبر کا اتل ہے زمانہ
 جس کھیت سے برقعانِ خمیر نہیں روزی
 کیوں خالق و مخلوق میں حائل رہیں پروے
 حق را بسجودے صغماںِ بطولِ ف
 میں ناخوش و بیزار ہوں مگر لی پہلوں سے
 تہذیبِ نبوی کا رُہِ شیشہ کراں ہے

کاخِ اُمرا کے در و دیوار پلا دو
 کُنشکِ فرومایہ کو شاہیں سے لڑا دو
 جو نقشِ کُہن تم کو نظر آتے، مٹا دو
 اُس کھیت کے پہنچو شتہ کندم کو جلا دو
 پیرانِ کلیسا کو کلیسا سے اٹھا دو
 بہتر ہے چراغِ حرم و دیر بچھا دو
 میرے لیے مٹی کا حرم اور بنا دو
 ادبِ جنوں شاعرِ مشرق کو بکھا دو!

जमाना

जो था नहीं है, जो है न हो गा, यही है इक हरफ़-ए-महरमाना
 करीब तर है नमूद जिस की, उसी का मुशताक है ज़माना
 मिरी सराही से कतरा कतरा नए हवादिस टपक रहे हैं
 मैं अपनी तसबीह-ए-राज़ो-शब का शुमार करता हूँ दाना दाना
 हर एक से अशना हूँ, लेकिन जुदा जुदा रस्मो-राह मेरी
 किसी का राकिब, किसी का मरकब, किसी को इबरत का ताज़ियाना
 न था अगर तू शरीक-ए-महफ़िल, कसूर मेरा है या कि तेरा
 मिरा तरीका नहीं कि रख लूँ किसी की खातिर मैं-ए-शबाना
 मिरे खमो-पेच को नजूमी की आंख पहचानती नहीं है
 हदफ़ से बे-गाना तीर उस का, नज़र नहीं जिस की आरिफ़ाना
 शफ़क़ नहीं मगरिबी उफ़क़ पर, यह जू-ए-खूँ है, यह जू-ए-खूँ है!
 तुलूअ-ए-फ़रदा का मुन्तज़िर रह कि दोशो-इमरोज़ है फ़साना
 वह फ़िक़-ए-गुस्ताख़ जिस ने उरियां किया है फ़ितरत की ताकतों को
 उसी की बे-ताब बिजलियों से ख़तर में है उस का आशियाना
 हवाएं उन की, फ़ज़ाएं उन की, समंद्र उन के, जहाज़ उन के
 गिरह भंवर की खुले तो क्यूंकर, भंवर है तकदीर का बहाना
 जहान-ए-नौ हो रहा है पैदा, वह आलम-ए-पीर मर रहा है
 जिसे फ़रंगी मुक़ामिरों ने बना दिया है किमार-ख़ाना
 हवा है गो तुंदो-तेज़ लेकिन चराग़ अपना जला रहा है
 वह मर्द-ए-दरवेश जिस को हक़ ने दिये हैं अन्दाज़-ए-खुर्रवाना

زمانہ

جو تھا نہیں ہے، جو ہے نہ ہو گا یہی ہے اک حرفِ بحرِ ناز
 قریب تر ہے نوحہ جس کی، اسی کا مشتاق ہے نانا
 ہری صراحی سے قطروں سے عادت ٹپک رہے ہیں
 میں اپنی سیخ روز و شب کا شمار کرتا ہوں اندوہ
 ہر ایک سے آشنا ہوں لیکن جدا جدا رسمِ راہ میری
 کسی کا رال، کسی کا ترکیب، کسی کو عبرت کا تازیانہ
 نہ تھا اگر تو شہرِ محبت، قصور میرا ہے یا کہ تیرا
 مرا طبعیت نہیں کہ رملوں کی خاطر سے مشابہ
 ہے جنم پہنچ کر نجومی کی آنکھ پہنچتی نہیں ہے
 ہر فکے بیگانہ تیرا کس کا، نظر نہیں جس کی عارف
 شفق نہیں سہری افق پریر جتنے خوں ہے یہ جتنے خوں ہے
 طلوع و غروب کا منتظر رہ کہ وہ شمسِ امروز سے فنا
 وہ سنگِ گرتان جس نے حیران کھیلے فطرت کی طاقتوں کو
 اسی کی بیستاب بگلیوں سے خطر میں ہے اس کا آشیانہ
 جو امیں ان کی قضائیں ان کی سمندر ان کے جہاز ان کے
 کردہ بھنور کی ٹھٹھکی تو کیونکر بھنور ہے تحتِ تیر کا بہنا
 جہان نو جو رہا ہے پیارا، وہ عالمِ پیہر مر رہا ہے
 جسے نہ ملی نعمتِ ابروؤں نے بنا دیا ہے قمارخانہ
 نہوا ہے گوشہ نشین، لیکن چراغِ اپنا جلا رہا ہے
 وہ مردِ رویش جس کو حق نے دیے ہیں اندازِ خسروا

शाहीं

किया मैं ने उस खाक-दां से किनारा
जहां रिज़क का नाम है आबो-दाना
बयाबां की खलवत खुश आती है मुझ को
अज़ल से है फितरत मिरी राहिवाना
न बाद-ए-बहारी, न गुलचीं, न बुलबुल
न बीमारी-ए-नरामा-ए-आशिकाना
ख्याबानियों से है परहेज़ लाज़िम
अदाएँ है इन की बुहत दिल-बराना
हवा-ए-बयाबां से होती है कारी
जवां-मर्द की ज़बर्त-ए-गाज़ियाना
हमामो-कबूतर का भूका नहीं मैं
कि है ज़िन्दगी बाज़ की जाहिदाना
झपटना, पलटना, पलट कर झपटना
लहू गर्म रखने का है इक बहाना
यह पूरब, यह पच्छिम चकोरों की दुनिया
मिरा नीलगूं आसमां बे-कराना
परिन्दों की दुनिया का दरवेश हूं मैं
कि शाहीं बनाता नहीं आशियाना

شاہیں

کیا میں نے اُس خالِ داس سے کنار
جہاں زرق کا نام ہے آبِ دہ
بیاباں کی خلوتِ خوش آتی ہے مجھ کو
ازل سے ہے فطرتِ مری آہِ بہ
نہ بادِ بہاری نہ گلچیں نہ بلبَل
نہ بہا ربی نغمہ شہِ عاشقانہ
جیابانیوں سے ہے پر پیہر لازم
ادائیں ہیں ان کی بہت دسبر
ہو اتے بیاباں سے ہوتی ہے کاری
جواں مرد کی ضربتِ عنایانہ
حمام و کبوتر کا بھوکا نہیں میں
کہ ہے زندگی باز کی زاہدانہ
جھپٹنا، پلٹنا، پلٹ کر جھپٹنا
لہو گرم رکھنے کا ہے اک پہانہ
یہ پورب یہ پختہم جلووں کی دنیا
ہر انیس گلوں آسماں بیکرانہ

پرندوں کی دنیا کا درویش ہوں میں
کہ شاہیں بناتا نہیں ایشیانہ

अल-अर्जो लिल्लाह

पालता है बीज को मट्टी की तारीकी में कौन
कौन दरियाओं की मौजों से उठाता है सहाब
कौन लाया खेंच कर पच्छम से बाद-ए-साज़-गार
खाक यह किस की है, किस का है यह नूर-ए-आफ़ताब
किस ने भर दी मौतियों से खोशा-ए-गन्दम की जेब
मौसमों को किस ने सिखलाई है खू-ए-इन्क़िलाब
दह-ख़ुदाया! यह ज़मीं तेरी नहीं, तेरी नहीं
तेरे आबा की नहीं, तेरी नहीं, मेरी नहीं



शायर

कौम गोया जिस्म है, अफ़राद हैं आज़ा ए कौम
मन्ज़िल-ए-सनअत के रह-पेमा हैं दस्तो-पा-ए-कौम
महफ़िल-ए-नज़म-ए-हकूमत, चहरा-ए-जेबा-ए-कौम
शायर-ए-रंगीं-नवा है दीदा-ए-बीना-ए-कौम
मुबतिला-ए-दर्द हो कोई उज़्व हो, रोती है आंख
किस क़दर हम-दर्द सारे जिस्म की होती है आंख



الْأَرْضُ رَمْدًا!

پاست ہے بیج کو، مٹی کی تاریکی میں کون
 کون دریاؤں کی موجوں سے اٹھاتا ہے سحاب؟
 کون ٹالیا کھینچ کر پچھترسم سے باہر ازکار
 خال یہ کس کی ہے کس طے ہے یہ نورِ آفتاب؟
 کس نے بھروی موتیوں سے خوشہ کندم کی جیب
 موسموں کو بس نے بکھلائی ہے نمونے انقلاب؟
 وہ نہ دیا یا! یہ زمینیں سیری نہیں تیری نہیں
 تیرے ابا کی نہیں تیری نہیں تیری نہیں

شاعر

قوم کو یا جسم ہے افراد ہیں اعضائے قوم
 منزلِ صنعت کے لڑے پیمان ہیں دست و پائے قوم
 محفلِ نظمِ حکومت، چہرے زیبائے قوم
 شاعرِ زندیں نوا ہے دیدہ بینائے قوم
 مٹلاتے در کوئی عضو ہوتی ہے آنکھ
 کس قدر ہمدرد سارے جسم کی ہوتی ہے آنکھ

गज़ल

दिल-ए-मुरदा दिल नहीं है, इसे ज़िन्दा कर दुबारा
कि यही है उम्मतों के मरज़-ए-कुहन का चारा
तिरा बहर पुर-सकूं है, यह सकूं है या फ़सूं है?
न नहंग है, न तूफ़ां, न ख़राबी-ए-किनारा!
तू ज़मीर-ए-आसमां से अभी आशिना नहीं है
नहीं बे-करार करता तुझे ग़मज़ा-ए-सितारा
तिरे नीस्तां में डाला मिरे नग़मा-ए-सहर ने
मिरी ख़ाक-ए-पे-सिपर में जो निहां था इक़ शरारा
नज़र आए गा उसी को यह जहान-ए-दोशो-फ़रदा
जिसे आ गई मुयस्सर मिरी शोख़ी-ए-नज़ारा



जवानों को मिरी आह-ए-सहर दे
फिर इन शाहीं बचों को बालो-पर दे
ख़ुदाया! आज़ू मेरी यही है
मिरा नूर-ए-बसीरत आम कर दे





دل مردہ دل نہیں ہے، اسے زندہ کر دو بارہ
 کہ یہی ہے امتوں کے مرض کفن کا چارہ
 ترا بھر پریسکوں ہے یہ سکوں ہے یا فسوں ہے؟
 نہ ٹھنک ہے نہ طوفان، نہ خرابی کنارہ!
 تو ضمیر آسماں سے ابھی آشنا نہیں ہے
 نہیں بے فت راکر تاجِ عمرہ ستارہ
 ترخے نیستاں میں ڈالا مرے نغمہ بھرنے
 مری خال پے پیر میں جو نہاں تھا اک شرارہ
 نظر آئے گا اسی کو یہ جہانِ دوش و فردا
 جسے آگنی میدتر مری شوخی نطنارہ

*)

جانوں کو مری او سحرے پھرن شاہین بچوں کو بال پرے
 خدایا! از روی سری یہی ہے مزانو بصریت عام کروے

*)

ज़माना—ए—हाज़िर का इन्सान

ढूँढने वाला सितारों की गुज़र—गाहों का
अपने अफ़कार की दुनिया में सफ़र कर न सका
अपने हिकमत के ख़मो—पेच में उलझा ऐसा
आज तक फ़ैसला—ए—नफ़ओ—ज़रर कर न सका
जिस ने सूरज की शोआओं को गरिफ़तार किया
ज़िन्दगी की शब—ए—तारीक़ सहर कर न सका



ख़िरद से राह—रो रौशन बसर है
ख़िरद क्या है, चराग़—ए—रह—गुज़र है
दरून—ए—ख़ाना हंगामे हैं क्या क्या
चराग़—ए—रह—गुज़र को क्या ख़बर है



زمانہ حاضر کا انسان

ڈھونڈنے والا ستاروں کی لڑکا ہوں کا
 اپنے افکار کی دنیا میں سحر کرنے سکا
 اپنی حکمت کے حسم و پیچ میں الجھا لیا
 آج تک فیصلہ نفع و ضرر کرنے سکا
 جس نے سورج کی شعاعوں کو گرفتار کیا
 زندگی کی شب تاریک سحر کرنے سکا!

☪

خروشِ ابرو روشن صبح ہے خرد و کلیہ ہے چراغِ دل ہے
 درونِ جان سے نکلے ہیں لیا لیا چراغِ رہ لڑکا کو کیسے خبر ہے!

☪

सुलतान टीपू की वसियत

तू रह-नवर्द-ए-शौक़ है, मन्ज़िल न कर कबूल
लैला भी हम-नशीं हो तो महमिल न कर कबूल
ऐ जू-ए-आब बढ़ के हो दरिया-ए-तुंदो-तेज़
साहिल तुझे अता हो तो साहिल न कर कबूल
खोया न जा सनम-कदा-ए-कायनात में
महफ़िल गुदाज़! गर्मी-ए-महफ़िल न कर कबूल
सुबह-ए-अज़ल यह मुझ से कहा जिबरईल ने
जो अक्ल ~~का~~ गुलाम हो, वह दिल न कर कबूल
बातिल दुई-पसंद है, हक़ ला-शरीक़ है
शिरकत मियाना-ए-हको-बातिल न कर कबूल!



खुदाई अहतमाम-ए-खुशको-तर है
खुदावन्दा! खुदाई दर्द-ए-सर है
वलेकिन बन्दगी, असतगफ़िरुल्लाह!
यह दर्द-ए-सर नहीं, दर्द-ए-जिगर है



سُلطانِ ٹینیو کی وصیت

تُو رہ نور و شوق ہے ہنزل نہ کر قبول
 لیلِ بھی نیم نشیں ہو تو محفل نہ کر قبول
 اے جوئے اب بڑھ کے ہو دریا سے تند تیز
 ساحل تجھے عطا ہو تو محفل نہ کر قبول
 لکھو یا نہ جا صدم کدہ کائنات میں
 محفل کداز! کر می محفل نہ کر قبول
 صبحِ ازل یہ مجھ سے کہا جبریل نے
 جو محفل کا غلام ہو، وہ دل نہ کر قبول
 باطلِ ذوقی پسند ہے، حق لاشرکیا سے
 شرکتِ سیاہ حق و باطل نہ کر قبول!

*)

خداوند! جنتِ دانی دروہ سر ہے
 یہ دروہ نہیں، دروہ جو ہے
 خدائی استہامِ خشک و تر ہے
 ویکن بندگی استغفرا

*)

गज़ल

मिले गा मन्ज़िल-ए-मक़सुद का उसी को सुराग
अंधेरी शब में है चीते की आंख जिस का चराग
मुयस्सर आती है फ़ुरसत फ़क़त गुलामों को
नहीं है बन्दा-ए-हुर के लिए जहां में फ़राग
फ़रोग-ए-मगरिबियां ख़ीरा कर रहा है तुझे
तिरी नज़र का निगह-बां हो साहिब-ए-'माज़ाग'
वह बज़्म-ए-ऐश है महमान-ए-यक नफ़स दो नफ़स
चमक रहे हैं मिसाल-ए-सितारा जिस के अयाग
किया है तुझ को किताबों ने कोर-ज़ौक इतना
सबा से भी न मिला तुझ को बू-ए-गुल का सुराग!



तिरी दुनिया जहान-ए-मुर्गो-माही
मिरी दुनिया फ़ुगान-ए-सुबह-गाही
तिरी दुनिया में मैं महकूमो-मजबूर
मिरी दुनिया में तेरी पादशाही





ملے گا منبرِ نزل مقصود کا اسی کو سراغ
 اندھیری شب میں ہے پیتے کی آنکھ جس کا چراغ
 میسر آتی ہے فرہست فقط عن لاموں کو
 نہیں ہے بندہ خُمر کے لیے جہاں میں سراغ
 فروغِ معنہ بریاں خیر کر رہا ہے تجھ
 ترمی نطن کر کا نگہباز ہو صاحبِ مازاغ
 وہ برزمِ عیش ہے مہمانِ یک نفس و نفس
 چمکے ہیں مثالِ ستارہ جس کے یاغ
 کیا ہے تجھ کو گت بوں نے کو رذوق اتنا
 صبا سے بھی نہ پلا تجھ کو بونے گل کا سراغ!

*)

ترمی دنیا جہانِ مُرغ و ماہی مری دنیا فغانِ صبحِ گاہی
 ترمی دنیا میں محکوم و مجبور مری دنیا میں تیری پاؤں شاہی!

*)

गज़ल

दरिया में मोती, ऐ मौज़-ए-बे-बाक
साहिल की सौगात! ख़ारो-ख़सो-ख़ाक
मेरे शरर में बिजली का जौहर
लेकिन नयस्तां तेरा है नम-नाक
तेरा ज़ामाना, तासीर तेरी
नादां! नहीं यह तासीर-ए-अफ़लाक
ऐसा जुनूं भी देखा है मैं ने
जिस ने सिये हैं तकदीर के चाक
कामिल वही है रिंदी के फ़न में
मस्ती है जिस की बे-मिन्त-ए-ताक
रखता है अब तक मै-ख़ाना-ए-शरक
वह मै कि जिस से रौशन हो इदराक
अहल-ए-नज़र हैं योरुप से नोमीद
इन उम्मतों के बातिन नहीं पाक



دریا میں موتی، اسے موج بے باک
 ساحل کی سوغات باخار و خس و خال
 میرے شرر میں بحبلی کے جوہر
 لیکن نیستائیں تیرا ہے نم نال
 تیرا زمانہ، تاثیر تیری
 ناداں انہیں یہ تاثیر افلاک
 ایسا جنوں بھی دکھائے میں نے
 جس نے سسے ہیں قیمت دیر کے چال
 کابل وہی ہے رندی کے فن میں
 مستی ہے جس کی بے منت تال
 رکھتا ہے اب تک مہینہ شرق
 وہ ہے کہ جس سے روشن ہوا راک
 اہل نطنز ہیں یورپ سے نوید
 ان اُمتوں کے باطن نہیں پاک

गज़ल

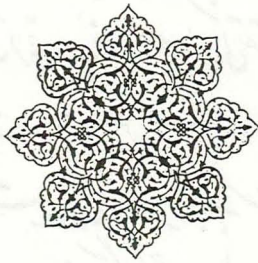
निशां यही है ज़माने में ज़िन्दा कौमों का
कि सुबहो-शाम बदलती हैं उन की तकदीरें
कमाल-ए-सिदको-मुरव्वत है ज़िन्दगी उन की
मुआफ़ करती है फ़ितरत भी उन की तकसीरें
कलंदराना अदाएं, सिकंदराना जलाल
यह उम्मतें हैं जहां में ब्रहना शमशीरें
खुदी से मर्द-ए-खुद-आगाह का जमालो-जलाल
कि यह किताब है, बाकी तमाम तफ़सीरें
शकोह-ए-ईद का मुन्किर नहीं हूं मैं, लेकिन
कबूल-ए-हक हैं फ़कत मर्द-ए-हुर की तकबीरें
हकीम मेरी नवाओं का राज क्या जाने
वरा-ए-अक्ल है अहल-ए-जुनूं की तदबीरें



نشاں یہی ہے زمانے میں زندہ قوموں کا
 کہ صبح و شام بدلتی ہیں ان کی تقدیریں
 کہاں صدق و مروّت سے نڈلی ان کی
 معاف کرتی ہے فطرت بھی ان کی تقصیریں
 قلندرانہ ادائیں ہر کندرانہ جلال
 یہ اہمتیں ہیں جہاں میں برہنہ شہسیریں
 خودی سے مرد خود آگاہ کا جمال و جلال
 کہ یہ کتاب ہے باقی تمام تفسیریں
 شکوہ عہد کا منکر نہیں ہوں میں لیکن
 قبول حق ہیں فقط مرد جس کی تفسیریں
 حکیم مہرے نواؤں کا راز کیا جانے
 وراے عقل ہیں اہل جنوں کی تدبیریں



Handwritten text in a cursive script, likely Persian or Urdu, arranged in several lines across the page. The text is faint and partially obscured by the central decorative element.





IQBAL ACADEMY PAKISTAN

Iqbal Academy Pakistan is a statutory body of the Government of Pakistan, established through the Iqbal Academy Ordinance No. XXVI of 1962, and a centre of excellence for Iqbal Studies. The aims and objectives of the Academy are to promote and disseminate the study and understanding of the works and teachings of Allama Iqbal.

In order to translate its objectives into action and activity Iqbal Academy undertakes the measures those are: Publication programme; IT Projects; Outreach activities; Iqbal Award Programme; Website; Research and Compilation; Audio-video; Multimedia; Archive Projects as well as Exhibitions, Conferences; Seminars; Projection Abroad; Research Guidance; Academic Assistance; Donations and Library Services etc.

Iqbal Academy Library is one of the oldest and the richest libraries in the world that have specialised in Iqbal Studies. Its collection of books on Iqbal studies and allied subjects cover the major International languages as also the regional languages of Pakistan. The back files of important and rare Periodicals augment book holdings. It not only provides academic logistics support to the research projects of the Academy but also extends research and reference facilities to a large number of students, teachers and Iqbal scholars every year.

Iqbal Academy Library has the unique honour of developing the first True Multilingual Library Database in 1989. Last year it developed the largest and most sophisticated Website on Iqbal to facilitate students and readers the world over through Internet.

Iqbal Academy Pakistan

Aiwan-i-Iqbal Complex, Lahore

Ph. 92-42-6314510 Fax 92-42-6314496

Email: iqbalacd@lhr.comsats.net.pk

Website: www.allamaiqbal.com